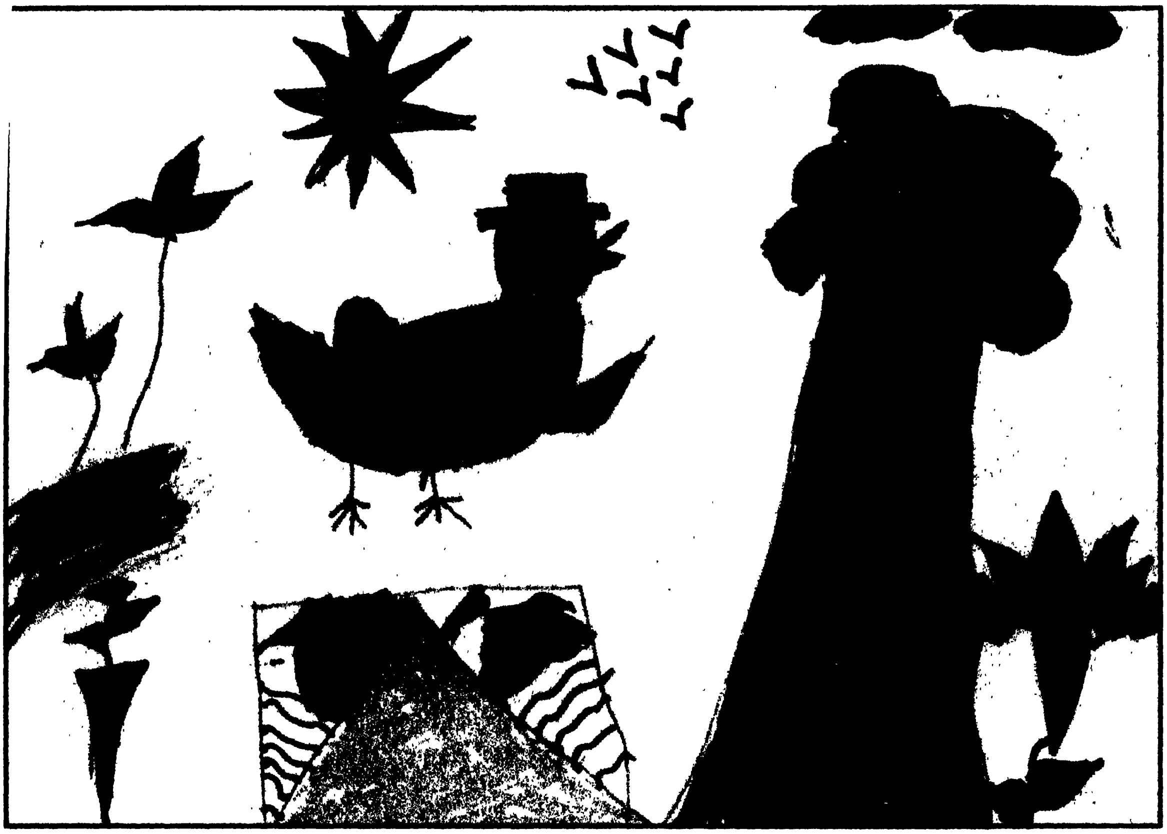

अंजली चौहान, दूसरी, भोपाल, म.प्र.

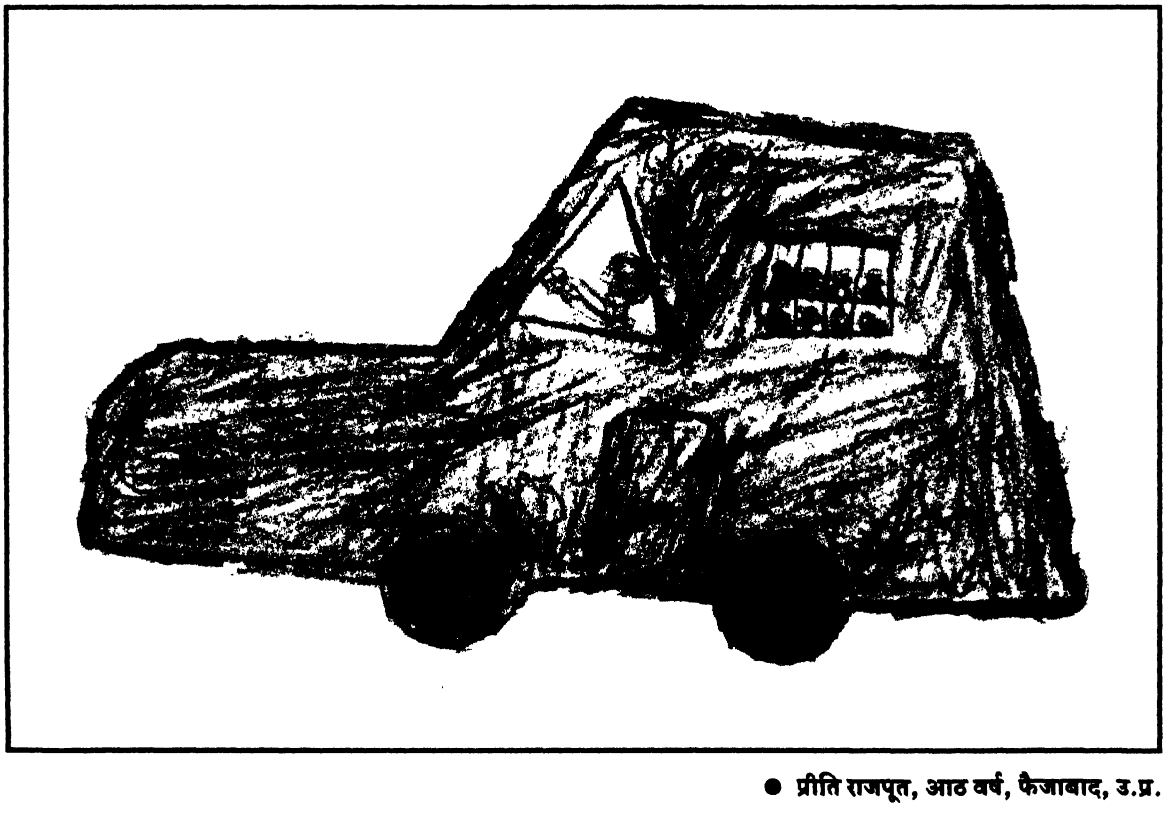

● प्रीति राजपूत, आठ वर्ष, फैजाबाद, उ.प्र.

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

के 186 वें अंक में

विशेष

सैंकड़ों साल पहले कोई एक तारा दिखा और फिर धीरे-धीरे उसका दिखना बन्द हो गया। फिर कई सौ सालों के बाद वो तारा टूटकर बिखर गया। किसी तारे के बनने और खत्म होने की कहानी कुछ इसी तरह की होती है। ऐसी ही कुछ जानकारी पढ़ो पेज 20 पर।

इन्हीं दिनों की बात है . . .

अगर तुम्हें किसी काम को करने के लिए कहा जाए तो क्या तुम बिना कोई सवाल किए उसे करने भिड़ जाओगे? किसी आज्ञा का पालन बिना जाने-समझे करते चले जाने का क्या मतलब है? लेकिन ऐसा होता है। ऐसी ही एक कहानी पढ़ो पेज 11 से।

कहानी

11 ➔ इन्हीं दिनों की बात है . . .

कविताएँ

3 ➔ खिलाड़ी अम्मा

18 ➔ फसलें

38 ➔ जड़ें

हर बार की तरह

2 ➔ इस बार की बात

4 ➔ मेरा पन्ना

32 ➔ माथापच्ची

34 ➔ वर्ग पहेली

रोचक शृंखला

16 ➔ गीत–संगीत : 8

19 ➔ चित्र बनाओ: रंग भरो

23 ➔ खेल दुनिया भर के : तीरंदाजी

धारावाहिक

28 ➔ प्यारा कुनबा : 13

और भी बहुत कुछ

10 ➔ करके देखो: कागज़ के बर्तन में पानी गरम?

15 ➔ चकमक समाचार

35 ➔ अपनी प्रयोगशाला: ऊर्जा की वाहक तरंगें

37 ➔ सूक्ष्मदर्शी से...

आवरण : क्रेब नेबुला (यह चित्र लाइफ़ नेचर लायब्रेरी की 'द यूनीवर्स' से साभार।)

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

मार्च का महीना... परीक्षाओं का तनाव, होली का हुड़दंग! जहाँ तक परीक्षा के तनाव की बात है... तो इससे उबरने के लिए या तो परीक्षा से ही बचना पड़ेगा... जो आज असंभव-सा है या फिर परीक्षा के तरीके को बदलना पड़ेगा। तुम क्या सोचते हो?

और होली तो रंगों का त्योहार है। जब भी खेलो छककर खेलो। बस इतना ध्यान रखो कि होली से न तो तुम्हें नुकसान पहुँचे न ही तुम्हारे किसी दोस्त को। एक और खास बात है इस महीने में।

आठ मार्च को हम अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाते हैं। जानते हो हम यह दिवस क्यों मनाते हैं? तुमने अक्सर लड़के-लड़कियों से अलग-अलग व्यवहार करने की बातें सुनी होगी। टी.वी. पर, अखबारों में भी इस सबके बारे में खूब सुना-पढ़ा होगा। क्या कभी तुमने अपनी आँखों से यह भेदभाव देखा है।

आज नहीं... यह तो सालों से चला आ रहा है... हमारे आसपास, हमारे कई घरों में भी लड़के को लड़की से श्रेष्ठ समझा जाता है। इसी मानसिकता के कारण कितने ही नियम बन गए।

- झाड़ू, सफाई, खाना जैसे कई काम सिर्फ लड़कियाँ ही करेंगी।
- लड़की को तो घर का काम ही करना है इसलिए उसे पढ़ने की क्या ज़रूरत है।
- कई जगह आज भी लड़की के पैदा होने पर दुख मनाया जाता है।
- शादी-ब्याह में भी लड़की पक्ष वालों को तरह-तरह के अपमान झेलने पड़ते हैं।
- छोटी-छोटी बातों से लेकर गंभीर मसलों तक में लड़कियों की स्थिति अच्छी नहीं है।

तुम क्या सोचते हो? क्या यह सब यूँ ही चलते रहना ठीक है? क्या हम सबको अपने-अपने स्तर पर इन बातों का विरोध नहीं करना चाहिए?

चकमक में हम लगातार इन सब बातों पर चर्चा करते आ रहे हैं। तुम्हारे अपने सोच में किस तरह का बदलाव आया है? हमें उम्मीद है तुम ज़रूर अपनी प्रतिक्रियाएँ भेजोगे।

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-16 अंक-9 मार्च, 2001

सम्पादन
विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल बिश्वास

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम
अशोक रोकड़े

सहयोग
राकेश खत्री
सुशील शुक्ल

कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक ख़र्च हमारा

चंदा, मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

खिलाड़ी अम्मा

खेलकूद में नहीं अनाड़ी
हमारी अम्मा बड़ी खिलाड़ी
बहुत खेल उन्हें आते हैं
बैट बॉल उन्हें भाते हैं
दौड़ में कैसे फरवट भागे
रस्साकशी में सबसे आगे
पेड़ पे चढ़ने से न डरती
मछली-सी तैराकी करती
सतोलिया हो या गिल्ली-डण्डा
ऊँचा रहता उनका झण्डा
हम बनें खिलाड़ी ठान लिया है
अम्मा को गुरु मान लिया है।

● कमला भसीन
● चित्र : गीता वडेरा

। धम्मक धम से साभार

ऐसी थी एक होली

हमारी कालोनी में होली का दहन स्थल है। जो कि हमारे घर के पास में ही स्थित है। कॉलोनी के नौजवानों ने होली दहन के पूर्व की टोली बनाकर लकड़ियाँ चुराने की योजना बनाई। और सभी लड़कों ने टोली बनाकर चोरों की भाँति एक घर से दूसरे घर के चक्कर काटना प्रारम्भ कर दिए। जहाँ कहीं सामने वाले की नज़र चूकी कि उसके घर की बागड़ एवं दरवाजे (गेट) आदि सामग्री लाकर होली में रख देते थे। यह सब देखकर हमारे पापा-मम्मी ने हमें यह कार्य न करने की सख्त हिदायत दी। मैं भी मम्मी-पापा के आदेश को मानकर अपने दोस्तों से मिला।

मेरे एक दोस्त के पास जीप थी। हम चार दोस्त जीप लेकर बाजार घूमने निकल पड़े। अचानक एक वृद्ध बीमार हमारी जीप के पास आकर कहने लगा कि मेरा बेटा मुझसे भी ज़्यादा बीमारी की हालत में है। उसकी दवा करवाने के लिए मैं गाँव से शहर आया हूँ, डॉक्टर को लेने। हमसे कहने लगा कि बेटा अब काफी शाम हो चुकी है। मेरा चश्मा भी कहीं गिर गया है। मुझे कमजोरी होने के कारण चक्कर आने लग गए हैं। कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा है। बेटा ऐसी स्थिति में तुम मुझे मेरे गाँव (घर) तक छोड़ दो। मैं तुम्हारा बड़ा अहसानमन्द रहूँगा।

उस वृद्ध के यह शब्द मेरे कानों में गूँजने लगे और मैंने तुरन्त ही अपने दोस्त से कहा, कि क्यों न हम इस होली के पर्व पर एक पुण्य का कार्य करें। दोस्त ने मेरी बात को मान लिया और तुरन्त ही उस वृद्ध बाबा को गाड़ी में बिठा डॉक्टर को लेकर हम गाँव की ओर चल दिए।

रास्ते में होलिका दहन होने के कारण आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र झाबुआ में शराब पीना आम बात है। और इस दिन विशेष तौर पर शराब पी जाती है। वृद्ध, जवान, स्त्री, बच्चे और आदिवासी नवयुवक और नवयुवती अपनी परम्परागत वेशभूषा में सज-धजकर होली का त्यौहार मनाने के लिए झुण्ड बनाकर गोट (पैसा) माँगते हैं। मादल की थाप पर उनके पैर थिरकते रहते हैं। जब तक उन्हें गोट नहीं दी जाती तब तक वे घेरकर नाचते-गाते रहते हैं।

हम भी जीप सहित उनके द्वारा घेर लिए गए। ज्योंही हमारी गाड़ी रुकी एक नवयुवक ने नशे की हालात में गाड़ी की जीप पर लकड़ी खींच मारी और जीप के सारे काँच फोड़ दिए। हमारे दोस्त को चोट लगी और वो गाड़ी चलाने की स्थिति में नहीं रहा। अन्य शरारती युवकों ने भी पत्थर बरसाना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने पूरे रोड को पत्थरों से घेर रखा था। ऐसी हालत में हम परेशान हो गए। सभी चोटग्रस्त हो गए। अचानक एक रोडवेज बस आकर रुकी। उन्होंने हमारी हालत को देखकर हमें अस्पताल पहुँचाया और हमारा इलाज करवाया। वह वृद्ध बीमार व्यक्ति सदमे से मर गया। डॉक्टर भी घायल हो गया। क्योंकि उसके सर पर भी एक पत्थर लगा था। निकले थे किसी की भलाई करने और स्वयं को जोखिम में डाल लिया। पर आज भी मैं यह सोचकर उदास हो जाता हूँ कि उस वृद्ध को मरते देख उसके बीमार पुत्र पर क्या असर हुआ होगा।

● विनोद कुमार परमार, कालीदेवी, झाबुआ, म.प्र.

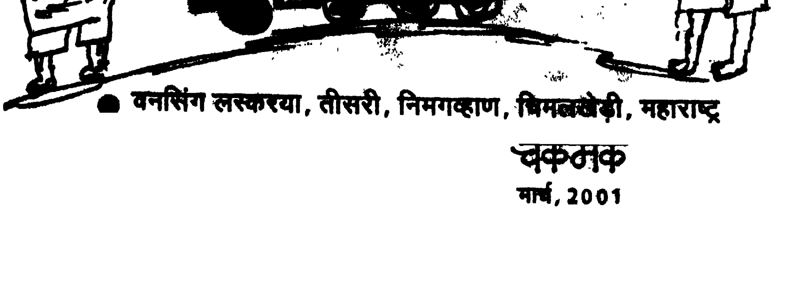

● वनसिंग लस्करया, तीसरी, निमगव्हाण, चिमलखेड़ी, महाराष्ट्र

मेरा पन्ना

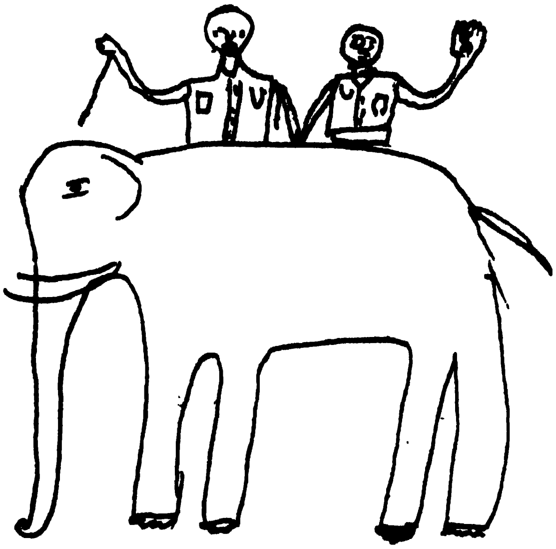

राजकुमार पंवार, आठवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद, म. प्र.

● पालन गजपाल, चौथी, दुर्ग, छत्तीसगढ़

अर्जुन खरे, दूसरी, इन्दौर, म.प्र.

सीमा

पहेलियाँ

(1)

बिना पैर के चलती हूँ,
बिना मुँह के बोलती हूँ
बताओ मैं क्या हूँ, जो
सबको आकर्षित करती हूँ।

(2)

बचपन हरा–हरा होता है
और बुढ़ापा पीला
आम संतरा नहीं मौसम्बी,
सचमुच बड़ा रसीला

(3)

न देखे न बोले
फिर भी भेद खोले

(4)

इतनी सी डिबिया डब डब करे,
बड़े–बड़े मोती, झर झर झरे

(5)

किसी को भी कर सकता हूँ अपने अंदर कैद
बड़ा हो या छोटा किसी में नहीं भेद

अभय कुमार जैन, मड़देवरा, म.प्र.

सोना चाँदी

मेरी मम्मी बहुत बीमार पड़ गई थी। उन्होंने कई जगह इलाज करवाया पर ठीक नहीं हुई। अन्त में एक वैद्य के पास गईं। वैद्य ने हाथ की नाड़ी छुई और सारी बात बता दी कि कहाँ तुम्हारे दर्द होता है। मम्मी बोली अरे, बिल्कुल सही बोले हैं आप। वैद्य जी ने कुछ दवाई दी, जिस पर लिखा था। सोना भस्म, मोती भस्म, चाँदी भस्म, शंख भस्म। जब मैंने इसे पढ़ा तो यकीन नहीं हुआ। मैंने पापा से पूछा क्या इसमें असली का सोना डला है। पापा ने कहा, हाँ। मैंने पापा से कहा कि सब लोग सोना पहनते हैं। पर हमारी माँ तो सोना खाती हैं। हमारे घर में शुभ, साक्षात लक्ष्मी देवी उतर गई, कितने भाग्यशाली हैं हम। यह सुनते ही मम्मी पापा हँसने लगे, तब से हम लोग मम्मी को ऐसा कह कर चिढ़ाते हैं।

● कृष्णाकुमार, फैजाबाद, उ.प्र.

● प्रीती राजपूत (पता नहीं लिखा)

साइकिल चलाना सीखा

पहली बार साइकिल चलाई तो मुझे मन में बहुत डर -सा था। पापा कहते थे डरना नहीं चाहिए। डरने से कुछ सीख नहीं सकते हैं। धीरे-धीरे मैं साइकिल चलाने लगी। मगर एक दिन मैं साइकिल चला रही थी तो सामने से स्कूटर आ रहा था। मैं एकदम घबरा गई और एकदम से स्कूटर से टकरा गई। बोली, ''मुझे माफ कर दीजिए।''

उन्होंने कहा, ''अगर चलाना नहीं आता है तो क्यों चलाती हो।'' मुझे बहुत बुरा लगा। और मैं सोचने लगी कि अगर मुझे ठीक से साइकिल चलाना आता होता तो आज मुझे वे अंकलजी कुछ भी नहीं कहते। अगर चोट लग जाती तो क्या होता। फिर पापा ने कहा कि मैं साइकिल पकड़ता हूँ, तुम साइकिल पर बैठो और चलाओ। उस दिन से मैंने साइकिल चलाने में गलती नहीं की। मैं साइकिल चलाना सीख गई। फिर मैं कभी किसी से नहीं टकराई।

रोहिणी सरकार, नौवीं, देवास, म.प्र.

दुर्घटना

एक बार मैं खेल रही थी मेरे मम्मी-पापा इन्दौर गए थे। मैं मेरे बगीचे में थी। एक स्कूल का टैम्पो बहुत दूर से बहुत तेजी से आ रहा था। और जैसे ही मुड़ा तो वह गिर गया। हम समझे कि कोई सायकल वाला गिर गया। पर जैसे ही हमने पीछे देखा तो टैम्पो गिरा था। मैं एक दम डर गई। मेरी सहेली की मम्मी को मैंने बुलाया कि आन्टीज़ी टैम्पो गिर गया है। तो वह तेजी से बाहर आई। उस टैम्पो में एक लड़की को इतनी जोर से सिर में लगी कि वह बेहोश हो गई।

मेरी सहेली की मम्मी ने उस लड़की के स्कूल बेग में से एक कापी निकाली तो उसमें उस लड़की का घर का पता और फोन नम्बर लिखा था। मेरी सहेली की मम्मी ने उस लड़की के घर फोन लगाया तो उसके घर से उसकी मम्मी आ गई। अस्पताल में उसे भर्ती किया। और वह चार दिन में ठीक हो गई। उस लड़की की मम्मी ने मेरी सहेली की मम्मी को धन्यवाद किया और मैंने उस लड़की से दोस्ती कर ली। वह मेरे घर कभी-कभी आती है। उस लड़की का नाम आरती वर्मा है।

● गायत्री कारपेंटर, नौवीं, देवास, म.प्र.

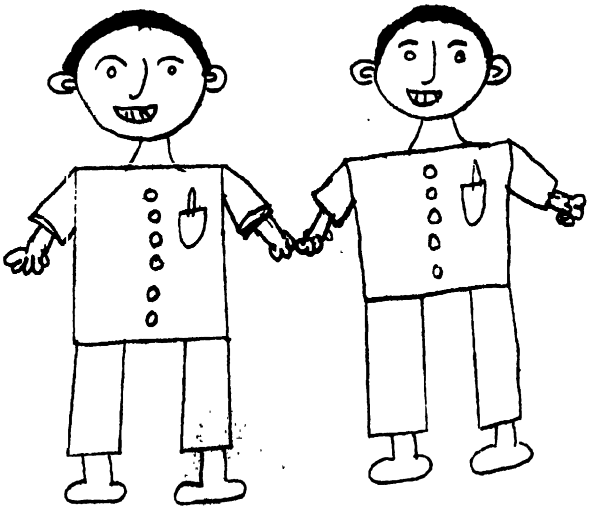

● अमन कपूर, दूसरी, समालखा, पानीपत, हरियाणा

मैं और मेरा दोस्त

मेरी क्लास पाँचवीं में एक नया लड़का था। शुरू-शुरू में तो उसने मुझसे बात ही नहीं करी। फिर धीरे-धीरे उसने मुझसे बात करी। फिर हम दोनों में लड़ाई हो गई। लड़ाई में तो हर किसी को गुस्सा आ जाता है। उसने फिर आगे होके मुझसे माफी माँगी, तो मैंने उसे माफ कर दिया। हम दोनों अब इतने अच्छे दोस्त हो गए कि अब हम एक साथ ही लंच करते, एक जगह ही बैठते, अभी भी हम दोनों वैसे ही दोस्त हैं।

● विशाखा गर्ग, देवास, म. प्र.

गाँव का मेला

हमारे गाँव का नाम जसौंदी है जो बुरहानपुर तहसील में तथा खण्डवा जिले में आता है। हमारे गाँव में जनवरी महीने की 19 तारीख को मेला लगता है। मेले में मैं खूब घूमा। फिर मैं पापा के साथ पंचपीर बाबा की पूजा करने गया। मज़ार पर बहुत से लोग चादर भी चढ़ाते हैं। मेले में मेरे पापा ने मुझे एक बाँसुरी और पुंगी और गेंद भी खरीद दिया। मैंने और खिलौने माँगे तो मेरे पापा ने कहा, अच्छे बच्चे जिद नहीं करते हैं। फिर मैं मान गया। मेरी दीदी और दीदी की सहेलियाँ झूले में बैठीं पर मैं नहीं बैठा। क्योंकि मुझे झूले में डर लग रहा था। रात मैं हम सब लोग आर्केस्ट्रा भी देखने गए। इस प्रकार मैंने मेले का बहुत आनन्द लिया।

● बन्टी रामकृष्ण महाजन, पहली, जसौंदी

दाँत

दाँत दाँत सफेद दाँत
कहाँ गया है मेरा दाँत
टूट गया है मेरा दाँत
है न यह मजे की बात

नील ताम्हणे, दूसरी, बैंगलोर, कर्नाटक

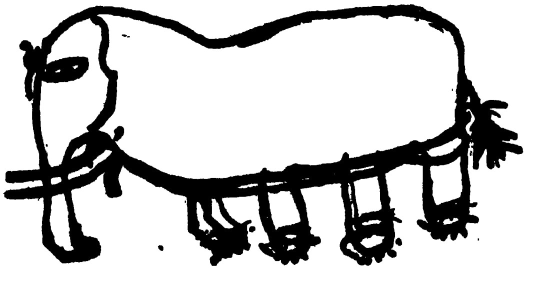

ओमप्रकाश, मड़देवरा, छतरपुर, म प्र.

मेरा सपना

मेरा नाम रीना कुमारी है। मेरी उम्र 13 साल की है। मैं बिहार के जहानाबाद जिले के मनियारगंज की रहने वाली हूँ। यहाँ कई गाँवों के बीच एक हाईस्कूल है। मैं इसी हाईस्कूल मैं आठवीं में पढ़ती हूँ। मेरे स्कूल के आसपास 13 गाँव हैं। मेरे स्कूल में कुल 38 लड़कियाँ पढ़ती हैं और 342 लड़के पढ़ते हैं। मेरी कक्षा में मात्र 7 लड़कियाँ पढ़ रही हैं।

इतनी कम लड़कियों की संख्या देखकर मुझे कभी-कभी बहुत दुख होता है। और सोचने लगती हूँ कि मेरे साथ जैसी समस्या है, उसी तरह सभी लड़कियों के साथ समस्याएँ होती होंगी। तभी तो पढ़ने वाली लड़कियों की संख्या इतनी कम है। मेरा पढ़ाई के प्रति बहुत ही लगाव और शौक है। मुझे पढ़कर अध्यापिका (टीचर) बनना है ताकि गाँव-गाँव जाकर खासकर लड़कियों और उनके माता-पिता को समझाऊँगी कि लड़का-लड़की दोनों को एक समान समझना चाहिए। और लड़कों की तरह लड़कियों को भी पढ़ाना ज़रूरी है, क्योंकि आगे चलकर लड़की को घर-परिवार चलाना पड़ता है। यदि लड़की पढ़ी-लिखी होगी तो अपने बच्चों और घर की देखभाल अच्छी तरह करेगी।

कभी किसी सहेली के गाँव जाती हूँ तो बड़ी-बड़ी लड़कियों को खेतों में काम करते, बकरी, गाएँ, भैंसे चराते और खेतों में गोबर जमा करते हुए देखती हूँ तो बड़ा बुरा लगता है। लेकिन मजबूरी है। यदि वे ये सब काम नहीं करेंगी तो उनके खर्च उठाने में बड़ी परेशानी होती है।

ये सब बातें मेरे साथ भी होती हैं। लेकिन मैं इन सब कामों को करते हुए भी पढ़ती हूँ। मैं घास भी गढ़ती (काटती) हूँ। घर का भी काम करती हूँ। मैंने प्रण किया है कि मुझे पढ़ना है और पढ़कर टीचर बनूँगी। और समाज में कुछ बदलाव लाने की कोशिश करूँगी। मैं आग्रह करती हूँ कि गाँव में रहने वाली थोड़ी पढ़ी-लिखी लड़कियाँ और महिलाएँ ऐसी दशा को बदलने के लिए आगे आएँ और समाज में कुछ बदलाव लाएँ।

मैं स्कूल में लड़कियों का एक 'सखी-सहेली क्लब' बनाने के लिए भी सोच रही हूँ। इस क्लब के माध्यम से लड़कियों को समझाकर स्कूल में पढ़ने आने के लिए प्रेरित करूँ। ऐसा कुछ करने की सोच रही हूँ। मेरी बातों को उन शिक्षित महिलाओं और लड़कियों तक पहुँचाएँ ताकि कुछ समाज में बदलाव आए।

● रीना कुमारी, आठवीं, जहानाबाद, बिहार

● चित्र : रोशनी व्याम, दूसरी, भोपाल, म. प्र.

कागज़ के बर्तन में पानी गरम?

क्या ऐसा सम्भव है? चलो करके देखते हैं।

1 एक मोटा कागज़ या पुराना पोस्टकार्ड लो।
2. इसे वर्गाकार बना लो।
3. अब चित्र की मदद से इसे मोड़कर एक तिकोना बर्तन बना लो।
4. इसे गोंद या टेप से चिपका लेना ताकि इसके सिर खुलें नहीं।
5. अब इसे पानी से भर दो।
6. एक मोमबत्ती जलाओ।
7. अब इस पानी से भरे कागज़ के बर्तन को मोमबत्ती की लौ के ऊपर पकड़ के रखो।

''मोमबत्ती से कागज़ जल गया, पानी गिरने से मोमबत्ती बुझ गई!''

क्या कहा ऐसा नहीं हुआ! कागज़ के बर्तन में उँगली डालकर देखो क्या पानी कुछ गरम हुआ? कागज़ के इस बर्तन को चिमटे से पकड़कर कुछ और देर मोमबत्ती की लौ पर रखकर देखो।

कागज़ कितनी देर तक नहीं जला?

क्या तुम बता सकते हो कि कागज़ के बर्तन में पानी रहने तक कागज़ आग क्यों नहीं पकड़ता? अपने नाम, कक्षा तथा पूरे पते के साथ इस सवाल का जवाब हमें विस्तार से लिख भेजना।

सावधानी : ध्यान रखना कि यह प्रयोग तभी तक करना है जब तक कागज़ के बर्तन में पानी हो, नहीं तो कागज़ आग पकड़ लेता है।

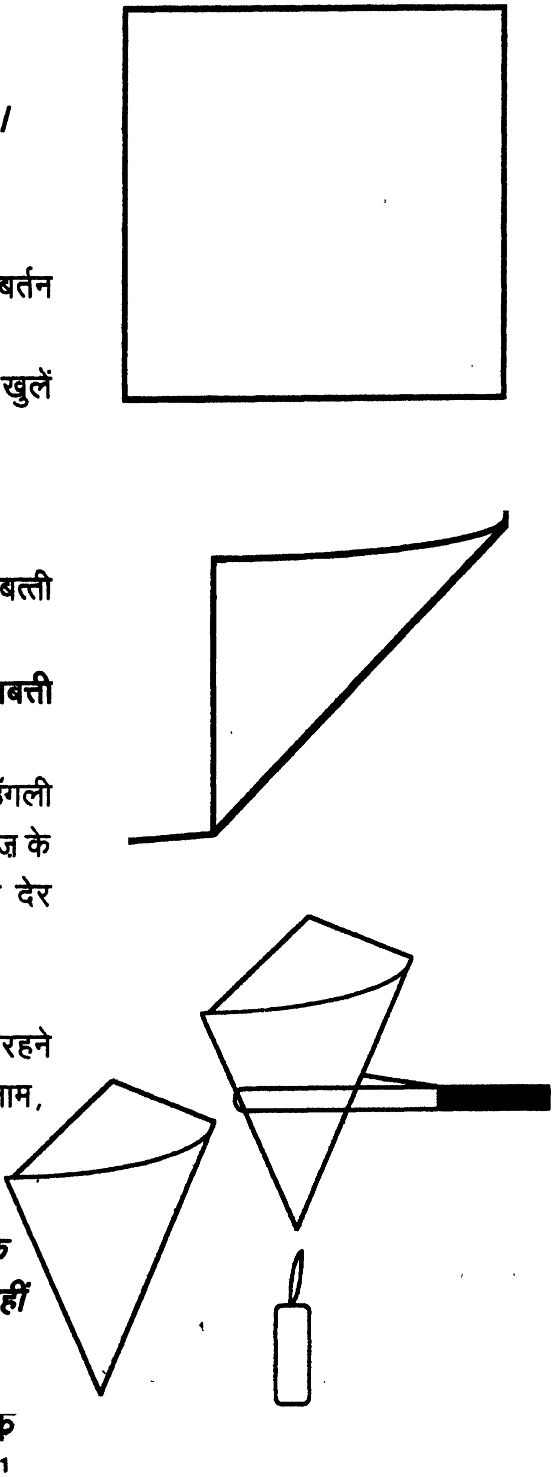

इन्हीं दिनों की बात है . . .

इलीनिर फ़ार्जियन

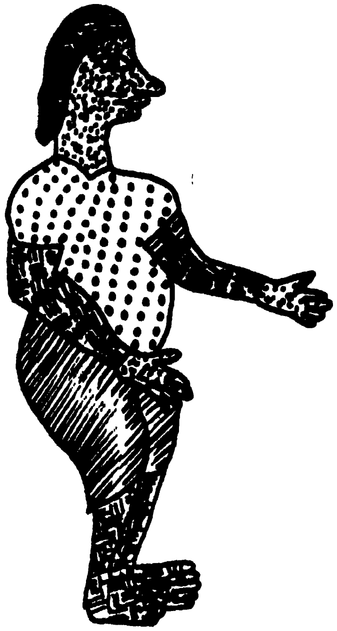

इन्हीं दिनों की बात है। किसी देश का एक प्रधान एक दिन टहलते हुए एक जगह पर पहुँचा। वहाँ पर उसने देखा कि एक संतरी बड़ी मुस्तैदी से यहाँ से वहाँ तक, कुछ कदम इधर, कुछ कदम उधर, लगातार पहरा दे रहा है। प्रधान ने कुछ देर तक संतरी को देखा और कुछ देर उस जगह को जहाँ की इतनी ज़बरदस्त पहरेदारी हो रही थी। मगर वहाँ पर न तो कोई इमारत थी, न ही कोई दरवाज़ा। आदमी तो दूर वहाँ पर तो कोई चीज़ भी नहीं पड़ी हुई थी।

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" प्रधान ने पूछा।

"आज्ञा का पालन कर रहा हूँ।" संतरी ने जवाब दिया।

प्रधान ने फिर पूछा, "आज्ञा क्या है?"

"कुछ कदम इस दिशा में और कुछ कदम उस दिशा में चलते हुए पहरा देना," संतरी ने बतलाया।

"क्यों?" प्रधान ने सवाल किया।

संतरी बोला, "पता नहीं।"

प्रधान अपने कार्यालय में पहुँचा और पूछा, "वहाँ एक संतरी पहरा क्यों दे रहा है?"

उसको बतलाया गया, "वहाँ पर तो हमेशा से ही एक संतरी तैनात है।"

"मगर क्यों?" प्रधान गरजा।

"यही आज्ञा है," उसे बताया गया।

"किसकी आज्ञा?" प्रधान ने पूछा। किसी के पास इसका कोई जवाब नहीं था।

"यह आज्ञा कब दी गई थी?" प्रधान ने फिर पूछा।

पर किसी को भी याद नहीं था।

"कितनी बेवकूफी की बात है" प्रधान बोला, "इसे बदलना पड़ेगा।"

फिर एक सभा बुलाई गई और इस प्रथा को बदल दिया गया। वहाँ से संतरी को हटाकर किसी और जगह भेज दिया। क्योंकि आखिर हवा में पहरा देने का क्या फायदा?

अब हम तुम्हें इस किस्से की पूरी कहानी सुनाते हैं।

उन दिनों (और यह सच्ची घटना है), एक रानी एक दिन अपने बगीचे में टहल रही थी, तो जानते हो उसने क्या देखा?

"एक फूल!'

तुम कहोगे कि इसमें क्या आश्चर्य की बात है। ठीक भी है, आखिर बगीचे में और क्या नज़र आएगा।

"घास-फूस," तुमने कहा। हाँ ये भी ठीक है। हम तो ऐसे बगीचों को जानते हैं जहाँ फूल कम, घास-फूस जंगली पौधे ज़्यादा नज़र आते हैं। ये बगीचे उन लोगों के होते हैं जो वादा करके भी अपने बगीचे की देखभाल करना भूल जाते हैं। मगर यह तो रानी का बगीचा था। वहाँ एक मुख्य माली था, मुख्य सफाई वाला था, मुख्य घास काटने वाला था और भी अन्य कई लोग थे। तो वहाँ फूल तो होने ही थे। फिर भी रानी ने इसी फूल को ध्यान से देखा। क्योंकि ऐसा फूल उसने कभी भी नहीं देखा था।

"कैसा फूल था?"

अरे, इससे क्या फर्क पड़ता है।

अब वो चाहे गुलाब रहा हो या गेंदा या सुगंधित चमेली या मचलती हुई चम्पा। पर वो फूल ऐसा था कि रानी उसे साँस रोके देखती ही रह गई।

अब रानी रोज उसे देखने आने लगी। एक दिन रानी ने देखा कि शाही माली बड़े जोर-शोर से धड़ाधड़ फूल काटे जा रहा है। रानी ने उससे जब पूछा कि वो क्या कर रहा है? तो उसने ज़वाब दिया, "रानी जी, आज रात को आपके विशाल भोज की सजावट के लिए ही यह तैयारी हो रही है।"

माली की बात सुनकर रानी का दिल धक्-से रह गया। वो दौड़कर उस कोने में पहुँची, जहाँ पर उसका खास फूल था और मस्त लहरा रहा था। रानी की जान में जान आई। उसने उसी वक्त अपने राज्य के प्रधानमंत्री को बुलाया और आदेश दिया, "मंत्री जी, मैं चाहती हूँ इस जगह पर दिन-रात एक संतरी पहरा दे।"

मंत्री ने घबराकर पूछा, "रानी जी, क्या कोई खतरा है?"

"बहुत बड़ा खतरा है?" रानी ने कहा।

मंत्री ने झुककर उस जगह का मुआयना किया। "क्या यहाँ पर बारूद बिछी है? या फिर कोई सुरंग है जहाँ से दुश्मन के आने का खतरा है? या फिर आपने यहाँ पर अपना गहना छुपाकर रखा है? अगर नहीं तो फिर बात क्या है?"

"मंत्री जी," रानी ने कहा, "हमारे महल के चारों तरफ इतने संतरी क्यों तैनात हैं?"

"क्योंकि आपकी जान हमारे देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण और प्रिय है।" मंत्री ने कहा।

रानी ने फूल की तरफ इशारा करके कहा, "क्या इससे खूबसूरत फूल पहले कभी देखा है?"

"नहीं, रानी जी।"

"और न ही कभी मैंने देखा है" रानी बोली, "यह फूल तुम्हारी रानी के दिल में बहुत प्रिय है। इसलिए यहाँ पर एक संतरी तैनात करें और देखें कि इस फूल को ज़रा-सा भी नुकसान न हो।"

रानी की बात पर फौरन अमल किया गया और लिखित आदेश जारी कर दिए गए। आधे घण्टे के अन्दर-अन्दर वहाँ पर एक चुस्त संतरी तैनात था। आदेशानुसार वह कुछ कदम इस दिशा में लेता था और कुछ कदम उस दिशा में। रोज़ रानी वहाँ आती थी और अपने फूल को देखकर खुश होती थी।

धीरे-धीरे मौसम बीतता गया और पतझड़ आ गया। फूल की पत्तियाँ झड़कर ज़मीन में गिर पड़ीं और पंखुड़ियाँ मुरझा गईं। मगर तब भी एक संतरी रात-दिन वहाँ पर पहरा देता रहा। क्योंकि आदेश

तो जारी हो चुके थे। सर्दियों के बाद फिर बसंत आया और रानी फिर से बगीचे में टहलने लगी।

मगर क्या वो फिर उस फूल को देखने गई? पता नहीं। शायद गई हो या नहीं भी गई हो। वो जाए या न जाए, एक संतरी लगातार सुबह-शाम उस जगह की पहरेदारी करता रहा। क्योंकि यही आदेश था।

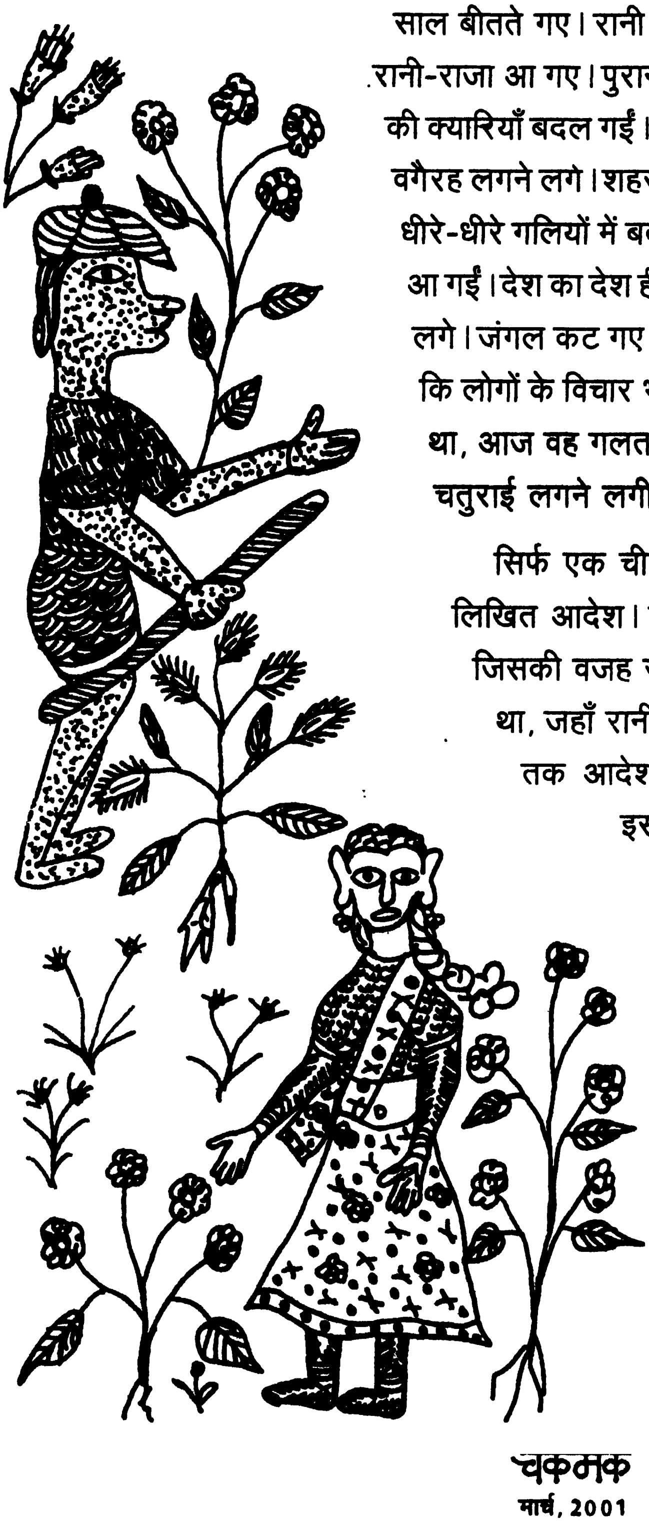

साल बीतते गए। रानी की मृत्यु हो गई और उसकी जगह दूसरे रानी-राजा आ गए। पुराने प्रधानमंत्री की जगह नए ने ले ली। बगीचे की क्यारियाँ बदल गईं। गुलाब की जगह गेंदा, गेंदे की जगह चमेली वगैरह लगने लगे। शहर में भी बदलाव आने लगे। बड़ी-बड़ी सड़कें धीरे-धीरे गलियों में बदल गईं और गलियों की जगह चौड़ी सड़कें आ गईं। देश का देश ही बदलने लगा। खेतों की जगह मकान बनने लगे। जंगल कट गए और नदियों की दिशा बदल गई। यहाँ तक कि लोगों के विचार भी बदलने लगे। कल तक जो सही था, सच था, आज वह गलत और झूठ हो गया। जो बेवकूफी थी वो ही चतुराई लगने लगी। जो कल था वो आज था ही नहीं।

सिर्फ एक चीज़ वहीं की वहीं थी और वो था रानी का लिखित आदेश। वही आदेश जो रानी ने तब निकाला था। जिसकी वजह से एक संतरी उस जगह पर पहरा दे रहा था, जहाँ रानी का प्रिय फूल हुआ करता था। और जब तक आदेश लिखे रहेंगे उनका पालन भी होना है। इसीलिए सालों से लगातार एक बंजर ज़मीन के टुकड़े पर एक संतरी, कुछ कदम इधर और कुछ उधर, गश्त लगाता ही रहा।

तब तक जब तक कि किसी ने आकर यह नहीं कहा, ''क्या बेवकूफी हो रही है।'' और संतरी को वहाँ से हटा दिया। आखिर किसी खूबसूरत चीज़ की पहरेदारी का क्या फायदा अगर यही नहीं पता कि वो है कहाँ? है न! ●

● चित्र : परसाद सिंग कुशराम

दिल्ली में

चकमक क्लब

दिल्ली के वसुंधरा एनक्लेव इलाके में एक बिल्डिंग है – जनयुग अपार्टमेंट्स। इसके ए –13 नम्बर के फ्लैट में चकमक के दो नन्हें पाठक शिप्रा और शिवांक रहते हैं।

वे दोनों ही बचपन से चकमक पढ़ रहे हैं। धीरे-धीरे चकमक पूरी बिल्डिंग में लोकप्रिय हो गई है। अब वहाँ एक-दो नहीं बल्कि प्रतिमाह चकमक की दस प्रतियाँ जाती हैं।

अब शिवांक और उसके साथियों ने मिलकर अपार्टमेंट में एक चकमक क्लब बनाया है। हर रविवार को गोष्ठी होती है। बच्चे ड्राइंग बनाते हैं, खेलते-कूदते हैं। पुस्तकें भी पढ़ते हैं। अपने आसपास घट रही घटनाओं, रोज़मर्रा के जीवन के विषयों पर चर्चा करते हैं। और अब तो चकमक पुस्तकालय की योजना भी बन रही है।

4 फरवरी की गोष्ठी का विषय था – भूकम्प। बच्चे तैयारी करके आए थे। कुछ भूकम्प के बारे में लिखकर भी लाए थे। गोष्ठी शिवांक के घर पर ही थी। संयोग से उसी दिन प्रसिद्ध कवि त्रिलोचन भी शिवांक के घर आए थे। वे भी गोष्ठी में शामिल हो गए।

26 जनवरी के दिन जब भूकम्प आया, तब बच्चे क्या कर रहे थे, उन्हें कैसे पता चला कि भूकम्प आया है? इस सबके बारे में बच्चों ने बताया। अपना लिखा हुआ पढ़कर सुनाया। त्रिलोचन जी ने भी भूकम्प के बारे में अपने बचपन की यादें बताईं।

11 फरवरी की गोष्ठी का विषय था – 'हम परीक्षा की तैयारी कैसे कर रहे हैं?' क्लब के बच्चे अपनी रचनाओं और चित्रों की एक हस्तलिखित पत्रिका निकालने के बारे में भी सोच रहे हैं।

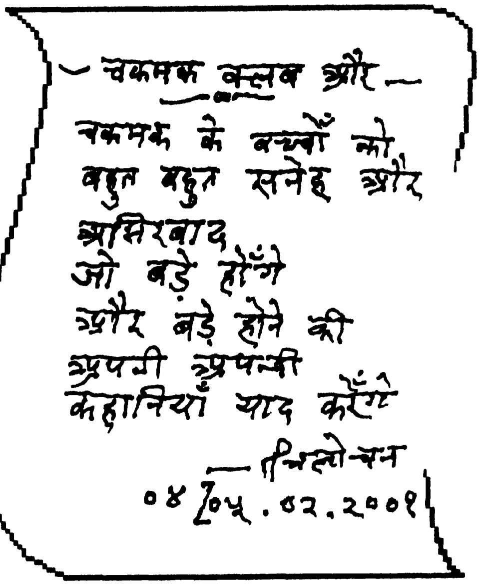

— चकमक क्लब और —
चकमक के बच्चों को,
बहुत बहुत स्नेह और
आसिरबाद,
जो बड़े होंगे
और बड़े होने की
अपनी अपनी
कहानियाँ याद करेंगे
— त्रिलोचन
04/05.02.2001

चकमक क्लब की इन गतिविधियों को देखकर शिवांक के पिता ने हमें लिखा है – *बच्चों की बातें अनमोल हैं। उनकी भोली दुनिया में यदि माँ-बाप प्रवेश करें तो वहाँ उन्हें साहित्य और भावों का अद्‌भुत खजाना मिलेगा। जैसा साफ-सुथरा और एकदम नया ताजा बच्चे सोचते हैं, बड़े तो सोच ही नहीं सकते। हम लोग तो बच्चों से चुराते हैं और अपने ज्ञान को बघारते हैं। जितनी नई कल्पनाएँ हमारे बच्चे कर लेते हैं हम कहाँ कर पाते हैं।*

काश, माँ-बाप बच्चों से जुड़ें तो बच्चों की दुनिया तो बदलेगी ही, माँ-बापों की दुनिया भी बदल जाएगी।

(श्याम सुशील, दिल्ली के पत्र से प्राप्त जानकारी पर आधारित)

जूही की कली मेरी लाड़ली

दिल एक मन्दिर फिल्म में यह गीत मीनाकुमारी और एक बाल कलाकार पर फिल्माया गया है। एक नन्हीं बच्ची अस्पताल में अपने इलाज़ के लिए भर्ती है। मीनाकुमारी के पति का इलाज़ भी उसी अस्पताल में हो रहा है। मीनाकुमारी और बच्ची के बीच दोस्ती हो जाती है। उस बच्ची के लिए ही यह गीत गाया जाता है।

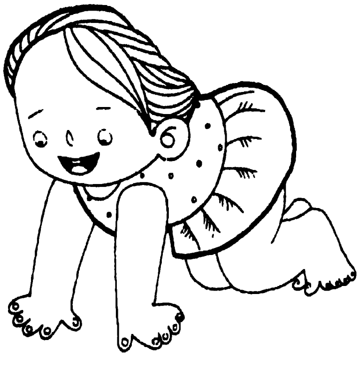

जूही की कली मेरी लाड़ली
नाज़ों की पली मेरी लाड़ली
ओ आस किरन जुग-जुग तू जिए
नन्हीं-सी परी मेरी लाड़ली, ओ मेरी लाड़ली.

धरती पर उतर आया चंदा तेरा चेहरा बना
चम्पे का सलोना गुलदस्ता तन तेरा बना
चम्पे का सलोना गुलदस्ता तन तेरा बना
ओ मेरी लाड़ली...

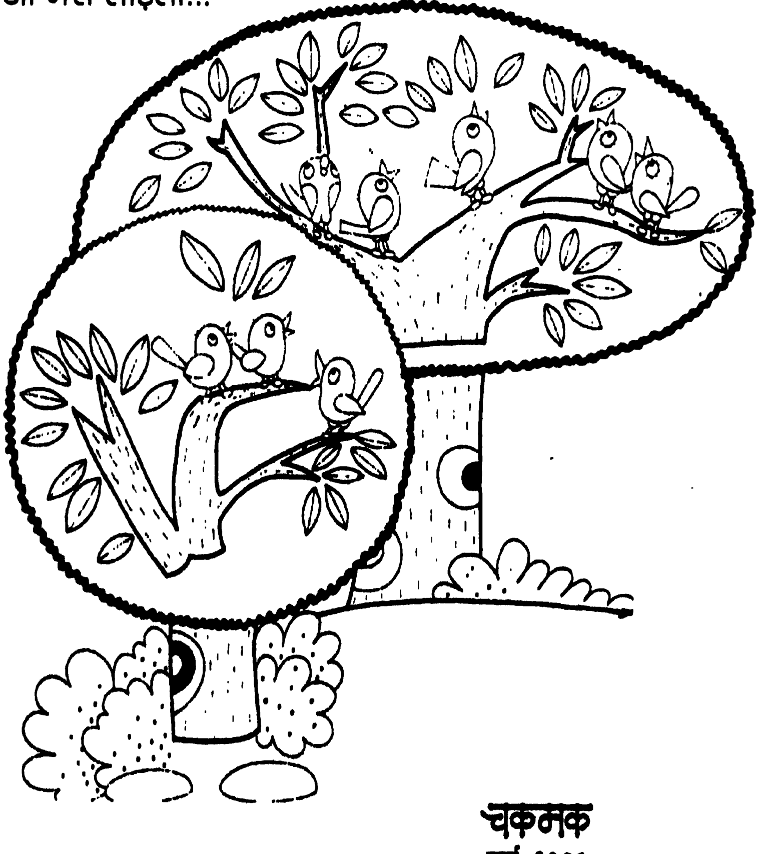

कोमल तितली मेरी लाड़ली,
हीरे की कनी मेरी लाड़ली.
ओ आस किरन जुग-जुग तू जिए,
नन्हीं-सी परी मेरी लाड़ली, ओ मेरी लाड़ली

शरमाए दिवाली तारों की तेरे नैनों से,
कोयल ने चुराई है पंचम तेरे बैनों से
कोयल ने चुराई है पंचम तेरे बैनों से
ओ मेरी लाड़ली...

गुड़िया-सी ढली मेरी लाड़ली,
मोहे लागे भली मेरी लाड़ली,
ओ आस किरन जुग-जुग तू जिए,
नन्हीं-सी परी मेरी लाड़ली, ओ मेरी लाड़ली

हर बोल तेरा सिखाए हमें दुख से लड़ना
मुस्कान तेरी कहती है सदा धीरज धरना
मुस्कान तेरी कहती है सदा धीरज धरना
ओ मेरी लाड़ली...

गंगा की लहर मेरी लाड़ली,
चंचल सागर मेरी लाड़ली,
ओ आस किरन जुग-जुग तू जिए,
नन्हीं-सी परी मेरी लाड़ली, ओ मेरी लाड़ली

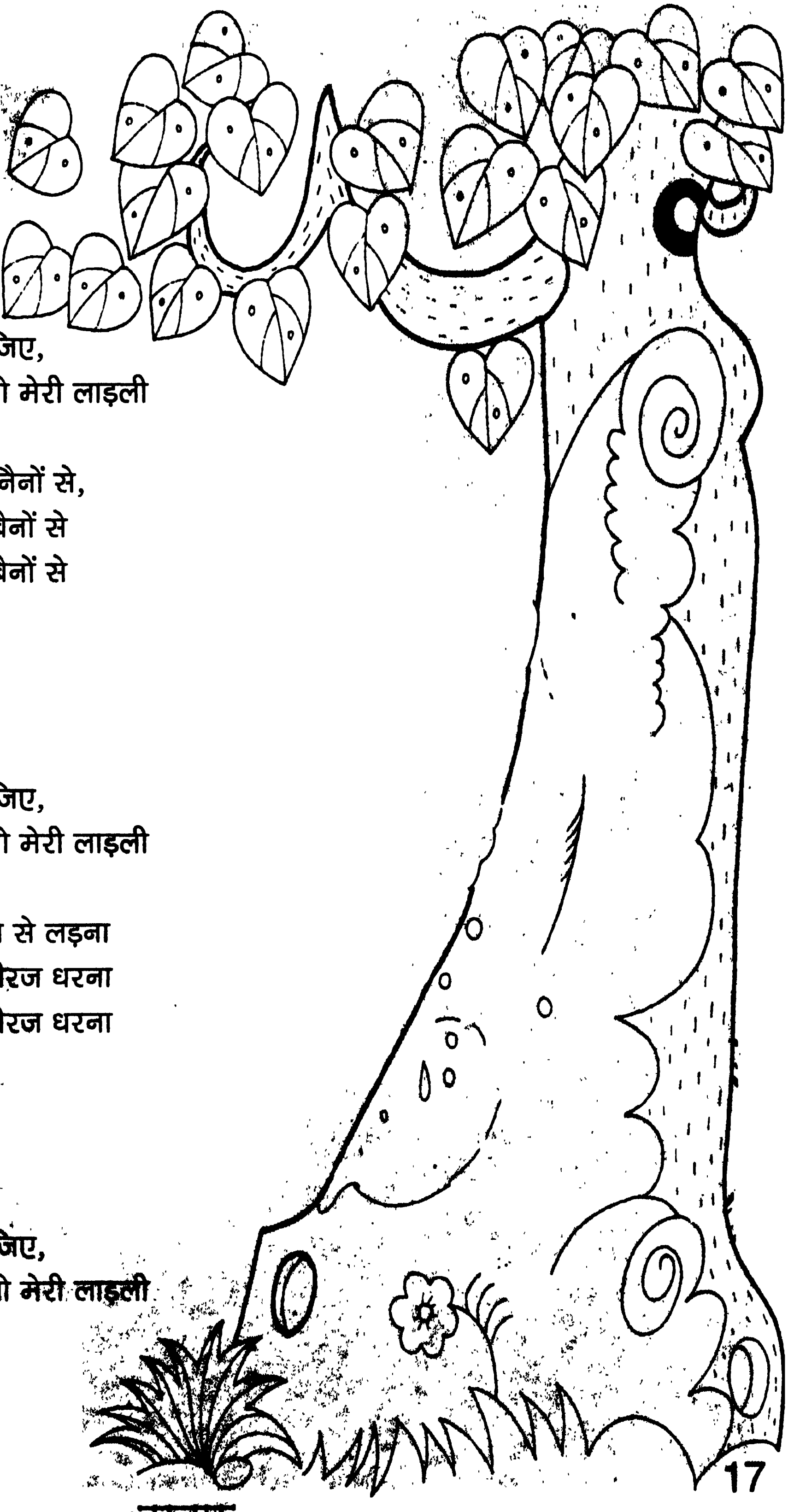

फिल्म : दिल एक मन्दिर
गायक : सुमन कल्याणपुर
गीतकार : शैलेन्द्र
संगीतकार : शंकर जयकिशन

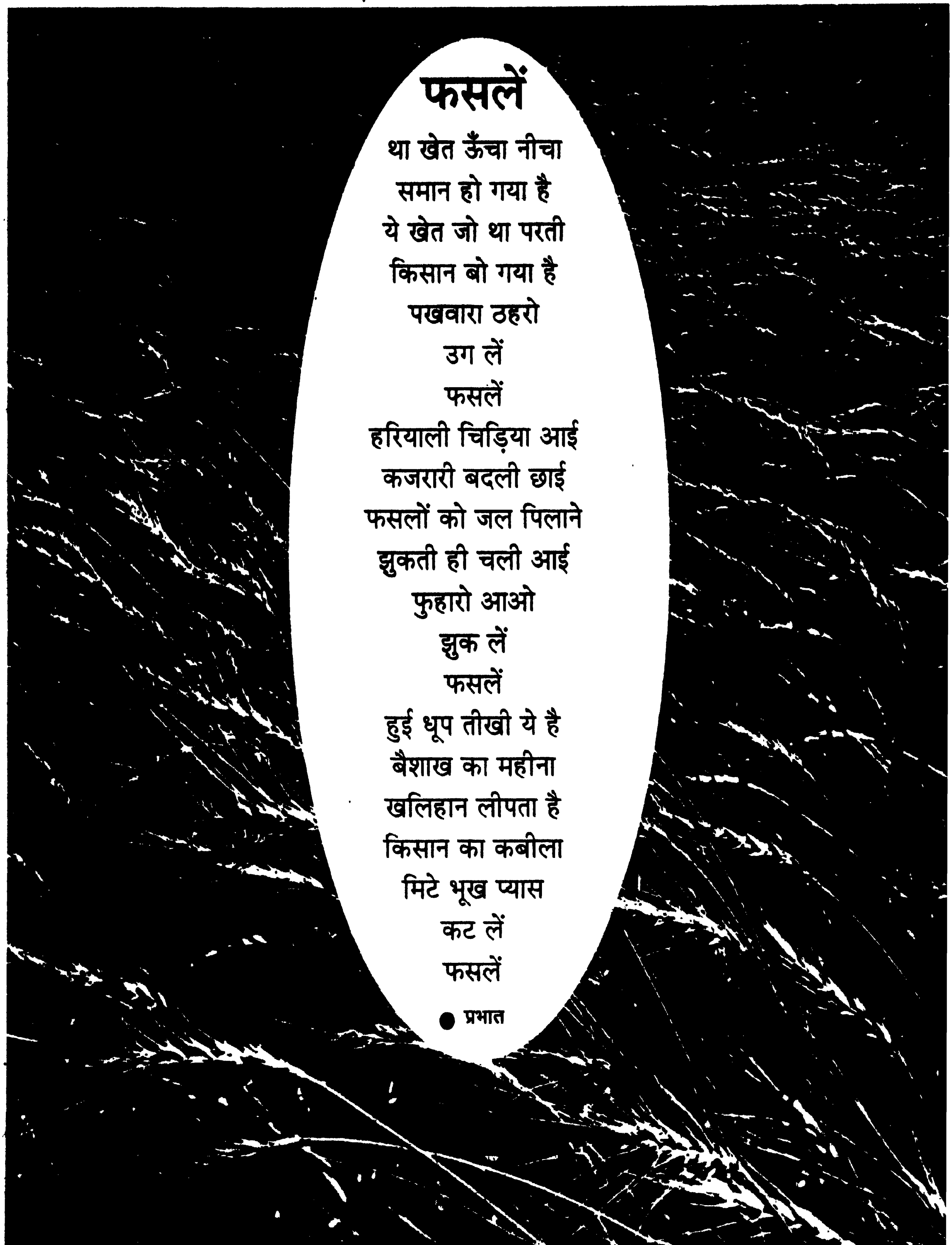

फसलें

था खेत ऊँचा नीचा
समान हो गया है
ये खेत जो था परती
किसान बो गया है
पखवारा ठहरो
उग लें
फसलें
हरियाली चिड़िया आई
कजरारी बदली छाई
फसलों को जल पिलाने
झुकती ही चली आई
फुहारो आओ
झुक लें
फसलें
हुई धूप तीखी ये है
बैशाख का महीना
खलिहान लीपता है
किसान का कबीला
मिटे भूख प्यास
कट लें
फसलें

● प्रभात

चित्र बनाओ, रंग भरो

जब तारा फटा

●सी. एन. सुब्रह्ण्यम्

बात आज से 945 साल पहले की है। 14 जुलाई सन 1054 की। उस दिन आकाश में एक अद्भुत दृश्य दिखा। उसे चीन देश के ज्योतिषियों ने देखा – रात भर आकाश की ओर ताकते रहना उनका काम जो था। उन्होंने देखा कि वृषभ राशि में एक नया और बहुत ही चमकीला तारा निकल आया है। धीरे-धीरे उसकी रोशनी तेज होती गई। देखते-देखते उसकी रोशनी पूरी धरती पर छा गई। वह तारा इतना चमकीला था कि अगले दिन सूर्योदय के बाद भी दिखता रहा। ऐसे कई दिन बीत गए।

इस नज़ारे को सिर्फ ज्योतिषियों ने ही नहीं देखा, पूरे देश के लोगों ने देखा। राजा ने भी। अब सब के मन में यह सवाल था कि यह क्या बला है? राजा के जो विरोधी थे वे कहने लगे, ''देखो राजा के अत्याचार से नाराज होकर देवताओं ने यह संकेत भेजा है। राजा को हटाना पड़ेगा, नहीं तो अनर्थ हो जाएगा।''

राजा के समर्थक कहते, ''बात उल्टी है। देवता राजा से इतना खुश है कि उसे आशीर्वाद देने के लिए नए तारे को भेजा है।''

दो महीने बाद उस तारे की रोशनी धीमी होते-होते खत्म हो गई। और तीन महीने बाद वह तारा दिखना बन्द हो गया। धीरे-धीरे लोग भी उस चमत्कारी नज़ारे को भूल गए। सिर्फ राजा के ज्योतिषियों ने उसे याद रखा और पूरी बात पुस्तकों में लिख ली। उन्होंने उसे ''मेहमान तारा'' कहा। कुछ ही दिनों का मेहमान जो वह ठहरा। किसी को यह समझ नहीं आया कि यह वास्तव में क्या था। वे यही सोचते रहे कि यह देवताओं का कोई संकेत है जिसे कोई ठीक से नहीं समझ पा रहा है।

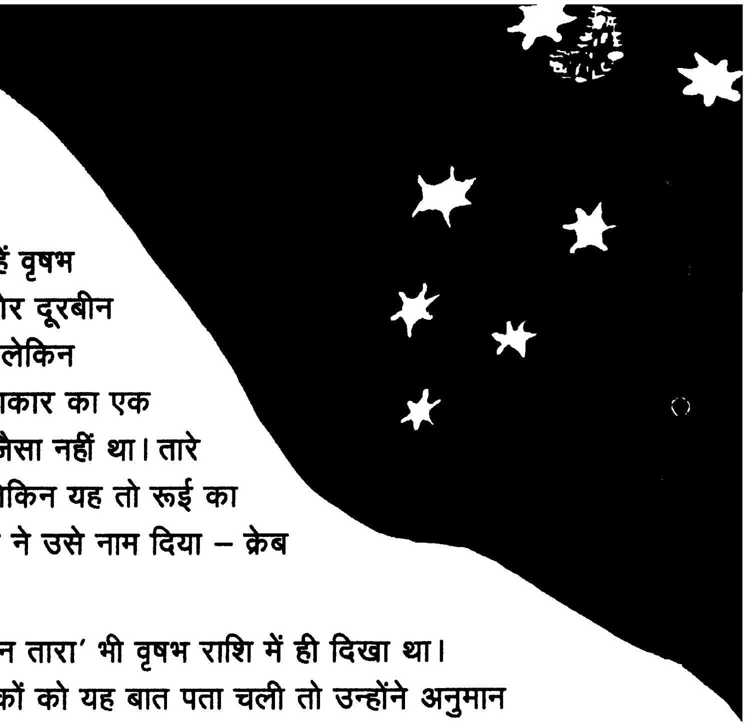

केंकड़ा पुंज

उस घटना के करीब 700 साल बाद इंग्लैण्ड के कुछ वैज्ञानिक दूरबीन की मदद से आसमान को छान रहे थे। उन्हें वृषभ राशि में कुछ अज़ीब सा दिखा। वैसे बगैर दूरबीन के उस जगह कुछ नहीं दिख रहा था। लेकिन दूरबीन से देखने पर वहाँ केंकड़े के आकार का एक प्रकाश पुंज दिखा। देखने में यह तारा जैसा नहीं था। तारे तो प्रकाश के बिन्दुओं जैसे दिखते हैं लेकिन यह तो रूई का गोला जैसा दिख रहा था। तो वैज्ञानिकों ने उसे नाम दिया – क्रेब नेबुला यानी केंकड़ा पुंज।

तुम्हें याद होगा कि चीन का 'मेहमान तारा' भी वृषभ राशि में ही दिखा था। खोजते-खोजते जब इंग्लैण्ड के वैज्ञानिकों को यह बात पता चली तो उन्होंने अनुमान लगाया हो न हो जो चमकीला तारा 1054 में दिखा था उसका ज़रूर क्रेब नेबुला से सम्बंध होना चाहिए।

फटा तारा

एक छोटे मामूली तारे का अचानक अत्यन्त तेज़ी से चमकना, फिर कुछ दिनों बाद दिखना बन्द हो जाना, उसकी जगह धुँधला प्रकाश पुंज का रह जाना। इन सब बातों का अध्ययन करके वैज्ञानिक एक आश्चर्यजनक निर्णय पर पहुँचे। उन्होंने कहा, ''यहाँ एक तारा था जो दीवाली के फटाके की तरह फटकर खत्म हो गया। जिस तरह फटाके फूटने के बाद वहाँ धुआँ रहता है वैसा ही है यह क्रेब नेबुला।''

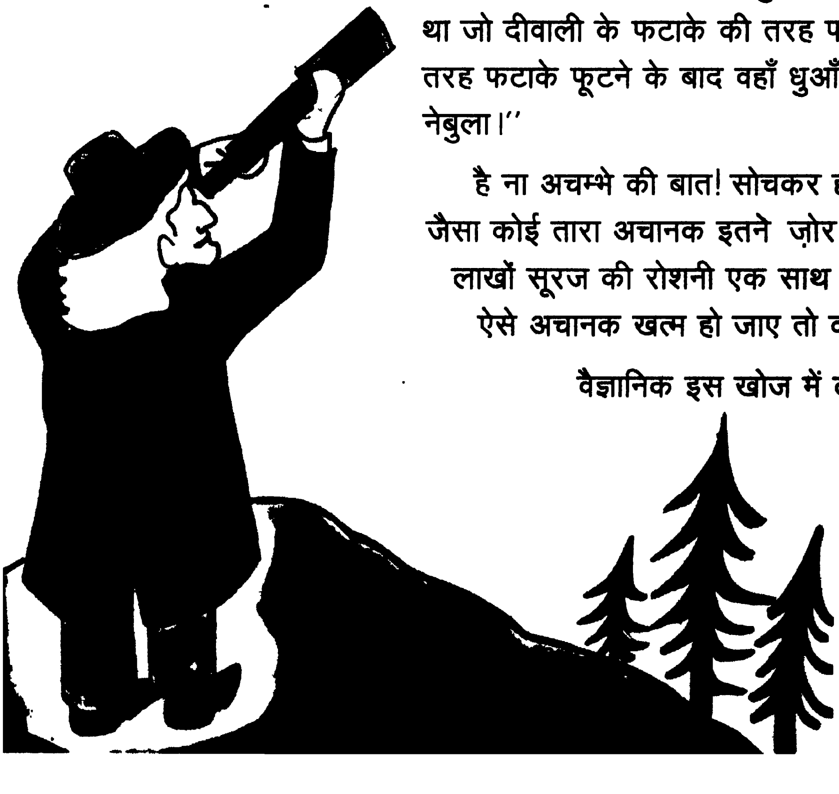

है ना अचम्भे की बात! सोचकर ही डर लगता है कि सूरज जैसा कोई तारा अचानक इतने ज़ोर से फट जाए कि उस जैसे लाखों सूरज की रोशनी एक साथ निकले। सोचो अगर सूरज ऐसे अचानक खत्म हो जाए तो क्या होगा?

वैज्ञानिक इस खोज में लगे रहे हैं कि तारे बनते कैसे हैं और खत्म कैसे होते हैं? क्या ऐसा भी हो सकता है कि अपना सूरज भी अचानक फट जाए?

सूरज का खत्म होना

लेकिन सूरज जैसा तारा अचानक न खत्म होता है न फटता है लेकिन कभी न कभी तो वह खत्म होगा। इसमें करोड़ो वर्ष लग जाएँगे और तब तक सूरज कई अवस्थाओं को पार कर चुका होगा। जैसे मनुष्य बचपन, जवानी और वृद्धावस्था से गुज़रता है और अन्त में मर जाता है वैसे ही तारे भी कई अवस्थाओं से गुज़रकर अन्त में खत्म हो जाते हैं।

तुम जानते हो कि सूरज जैसे तारों से लगातार खूब सारी ऊर्जा निकलती रहती है। इस दौरान उसमें मौजूद हाइड्रोजन धीरे-धीरे हीलियम में बदल जाती है। करोड़ों वर्ष तक इस तरह चमकने के बाद उसमें हाईड्रोजन खत्म होने लगेगा। तब उस तारे का आकार कई गुना बढ़ जाएगा और उसका रंग सफेद या पीला न रहकर लाल हो जाएगा। उसे 'रेड जायन्ट' या लाल दानव कहते हैं। धीरे-धीरे उसके बाहरी हिस्से आसपास बिखर जाएँगे और केवल उसका बीच का हिस्सा बचेगा। यह हिस्सा बहुत ही छोटा होगा और इसमें धीरे-धीरे गर्मी भी नहीं बचेगी। इस तरह चलते-चलते यह तारा खत्म हो जाएगा।

किसी तारे में सुपरनोवा विस्फोट के बाद क्रेब नेबुला बनता है। ऐसा ही एक क्रेब नेबुला ऊपर चित्र में दिखाया गया है। क्रेब नेबुला में गैसों का लम्बा-चौड़ा बादल दिखता है। उसके बीच में एक खूब घना तारा होता है, जिसे पल्सार या न्यूट्रान तारा कहा जाता है। यह रेडियो तरंगों का स्रोत होता है। यह तारा बहुत तेज़ी से घूमता है – एक सेकेण्ड में तीन से चार बार। ऐसा लगता है जैसे दूर आसमान में कोई घड़ी टिक-टिक कर रही हो।

सूरज से भी बड़े तारों का खत्म होना

कुछ तारे सूरज से भी बड़े होते हैं। उनकी कहानी में कुछ अन्तर होता है। रेड जायन्ट अवस्था में पहुँचने के बाद उनमें अचानक भयंकर धमाके के साथ विस्फोट हो जाता है। इस विस्फोट में जो प्रकाश और ऊर्जा निकलती है वह लाखों सूर्य के बराबर होती है। इसे सुपर नोवा विस्फोट कहते हैं। जब हम पृथ्वी से देखते हैं तो ऐसा लगता है कि एक साधारण-सा चमकने वाला तारा अचानक तेज चमकने लगा है। और कुछ दिनों बाद मंदा होकर दिखना बन्द हो जाता है। सन् 1054 में यही हुआ था।

इस लेख में हमने सारी बातें बहुत संक्षेप में कही हैं। अगर तुम और विस्तार में जानना चाहते हो तो हमें अपने सवाल लिख भेजना। ●

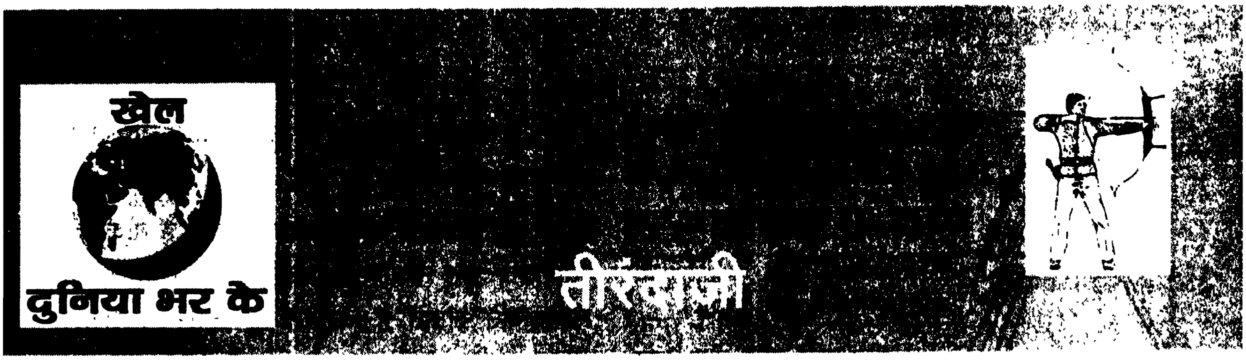

निशाना ताड़ना... शायद ही ऐसा कोई खेल होगा जिसमें इसकी जरूरत न पड़े। मसलन क्रिकेट में अच्छे थ्रो के लिए या बल्लेबाज को रनआऊट करने के लिए, तो बास्केटबॉल में थ्रो करके बॉल बॉस्केट में डालने के लिए! यही नहीं कई ऐसे खेल भी हैं जो इसी कला पर आधारित हैं। गप्पे, कंचे, गुलेल से लेकर गुल्ली-डंडे के खेलों में तो अगर आप निशाना लगाना नहीं जानते, तो इन खेलों में महारत भी हासिल नहीं कर सकते। ऐसे कम ही मेले लगते होंगे जिनमें निशाना लगाकर गुब्बारे फोड़ने का खेल न होता हो।

निशाना ताड़ने की इसी कला पर ही आधारित एक और खेल है... तीरंदाजी!

तीरंदाजी दुनिया भर में मशहूर है। राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी प्रतियोगिताएँ भी होती हैं। गाँव-गाँव में बच्चे बाँस की पतली लचीली पट्टी से धनुष बनाते हैं और इसी से तीर। कई त्यौहारों पर बच्चे स्वांग रचाकर तीर-कमान चलाते हैं।

इतिहास : तीरंदाजी का जन्म हजारों साल पहले हो गया था। तीरंदाजी मानव की जरूरतों से पनपी है। मध्यप्रदेश में भोपाल से 25-30 किलोमीटर दूर भीमबेटका नाम की एक विश्व-प्रसिद्ध जगह है यहाँ

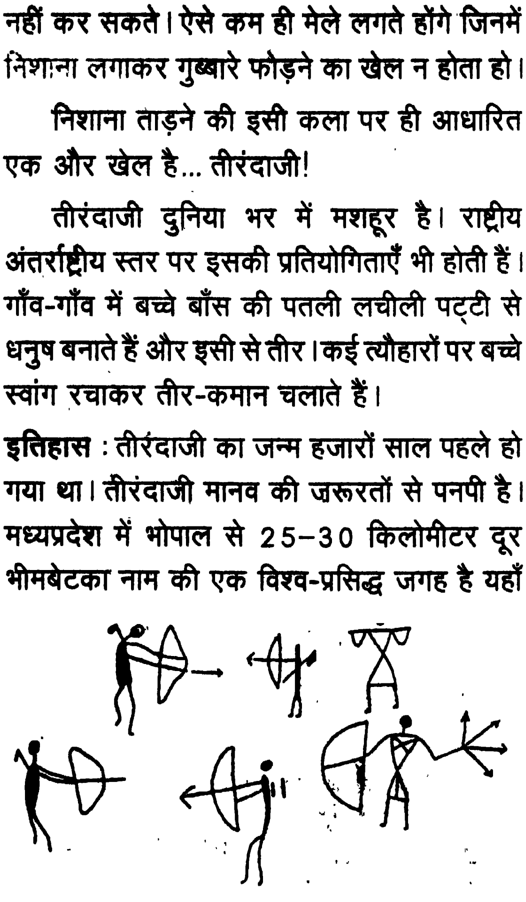

तीर-कमान से शिकार करते हुए मानव के शैलचित्र मिले हैं। कहते हैं ये कम से कम 20 हजार साल पुराने हैं। मिस्र और ग्रीक में भी तीरंदाजी की कई दंत कथाएँ प्रचलित हैं।

हमारे देश में भी कई प्राचीन ग्रंथों रामायण, महाभारत में इस कला का ज़िक्र मिलता है। एकलव्य का नाम तो तुमने भी सुना होगा। इस भील युवक को गुरु द्रोणाचार्य ने राजकुमारों के साथ धनुर्विद्या सिखाने से मना कर दिया था। आगे तो तुम जानते ही हो कि एकलव्य ने फिर खुद ही कड़े अभ्यास से इस विद्या में महारत हासिल कर ली थी।

तीरंदाजी के लिए दुनिया का सबसे पहला संगठन सन् 1844 में बना। नाम था 'ग्रांड नेशनल आर्चरी मीटिंगस।' इसी संस्था ने पहली बार बड़े स्तर पर तीरंदाजी की प्रतियोगिता करवाई।

सालों बाद तीरंदाजी के व्यवस्थित नियमों की ज़रूरत महसूस हुई। सन् 1931 में एक संस्था का गठन हुआ। जिसको अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तीरंदाजी प्रतियोगिता करवाने, उसके नियम निर्धारित करने का ज़िम्मा सौंपा गया। इस संस्था का नाम ''फैडरेशन इंटरनेशनल डि टिर-ए आई आर्च '' रखा गया। जिसे हम संक्षिप्त में आज 'फीटा' कहते हैं।

भारत में तीरंदाजी के लिए 1973 में राष्ट्रीय संस्था गठित हुई। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तीरंदाजी प्रतियोगिता में भारत ने 1986 में 'सियोल एशियाई

चैम्पियनशिप' में पहली बार भाग लिया। सियोल में ही 1988 में ओलम्पिक खेल हुए। यह पहला मौका था जब भारत ने ओलम्पिक की तीरंदाजी प्रतियोगिता में भाग लिया।

तीरंदाजी कुल तीन तरह की होती है। लक्ष्य तीरंदाजी, फील्ड तीरंदाजी और क्रासबो तीरंदाजी। यहाँ हम लक्ष्य तीरंदाजी के बारे में चर्चा करेंगे।

सामान्यतः लक्ष्य तीरंदाजी के मुकाबले कुछ चक्रों में पूरे होते हैं जिनमें एक निश्चित दूरी से निशाने साधे जाते हैं। तीर केन्द्र से कितनी दूर लगा, इसे आधार मानकर तीरंदाज को अंक दिए जाते हैं।

लक्ष्य तीरंदाजी मैदान में चौड़ी पट्टी बनाई जाती है इसी चौड़ी पट्टी पर अलग-अलग लेनें उकेरी जाती हैं। पुरुष तीरंदाजों और महिला तीरंदाजों की पट्टियाँ अलग-अलग होती हैं आम तौर पर दोनों पट्टियों के बीच दस मीटर का फासला रखा जाता है।

पुरुषों की तीरंदाजी पट्टी और महिलाओं की तीरंदाजी पट्टी में थोड़ा सा फर्क होता है। पुरुषों के लिए 90, 70, 50 और 30 मीटर के मुकाबले होते हैं जबकि महिला तीरंदाजों के लिए 70, 60, 50 और 30 मीटर के चार मुकाबले होते हैं।

हर तीरंदाज का अपना एक लक्ष्य होता है। पूरी प्रतियोगिता में तीरंदाजों पर नजर रखने के लिए अलग-अलग समितियाँ होती हैं। आयोजन समिति के अलावा एक फील्ड कप्तान, उसका एक सहायक, एक स्कोरर टीम और पाँच लोगों की तकनीकी टीम भी होती है।

अंतर्राष्ट्रीय तीरंदाजी प्रतियोगिताओं में किसी भी देश के तीरंदाज दो तरीकों से भाग ले सकते हैं। एक तो व्यक्तिगत मुकाबलों में, दूसरे टीम के रूप में। एक टीम में तीन तीरंदाज भाग लेते हैं। लम्बी दूरी के मुकाबलों में छह तीरों को साधने के बाद स्कोर देखा जाता है जबकि कम दूरी के मुकाबलों में तीन तीरों के बाद स्कोर लिया जाता है।

खुद तीरंदाज अपना स्कोर बताता है बाकी के तीरंदाज इस स्कोर को जाँचकर सहमति या असहमति जताते हैं। जानते हो कैसे? दरअसल 'लक्ष्य' इस तरह बनाया जाता है कि अंकों का निर्धारण आसानी से हो जाता है। 'फीटा' ने इसके लिए कुछ नियम बनाए हैं। नियमों को जानने से पहले 'लक्ष्य' को समझ लें।

'लक्ष्य' यानी जिस पर तीरंदाज को निशाना साधना होता है दो तरह के होते हैं। एक 122 सेंटीमीटर व्यास वाली चकती का होता है और दूसरा 80 सेंटीमीटर व्यास वाली चकती का। इन दोनों चकतियों पर बराबर-बराबर चौड़ाई की पट्टी के दस घेरे उकेरे जाते हैं। इस तरह बड़ी चकती पर 6.1 सेंटीमीटर चौड़ाई वाले घेरे और छोटी चकती पर 4 सेंटीमीटर वाले घेरे उकेरे जाते हैं।

फिर इन अलग-अलग घेरों में अलग-अलग रंग भर दिए जाते हैं सबसे बाहरी दो घेरों में सफेद रंग भरा होता है और इस घेरे को एक पतली रेखा खींचकर दो भागों में बाँट दिया जाता है।

इसी तरह इसके अंदर के दो घेरों में काला रंग होता है और यह दो भागों में बँटी होती है। फिर केंद्र की ओर इसके बाद वाले दो घेरों में नीला रंग, फिर लाल रंग

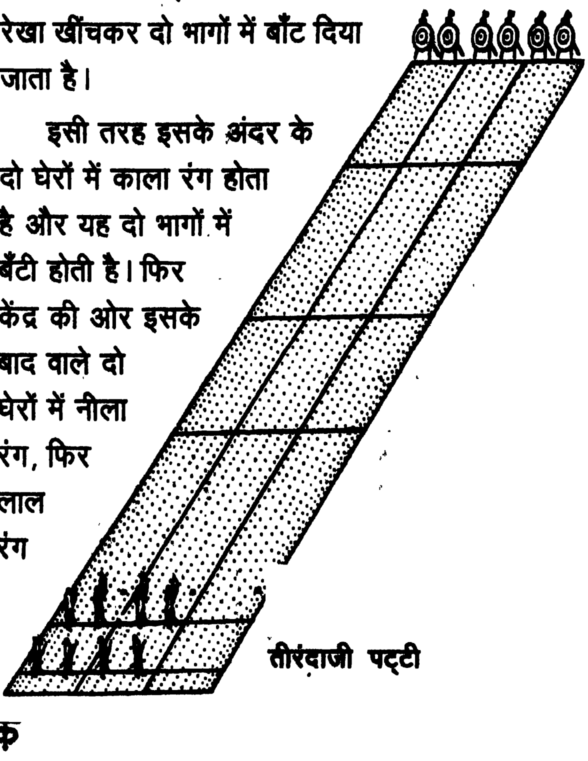

तीरंदाजी पट्टी

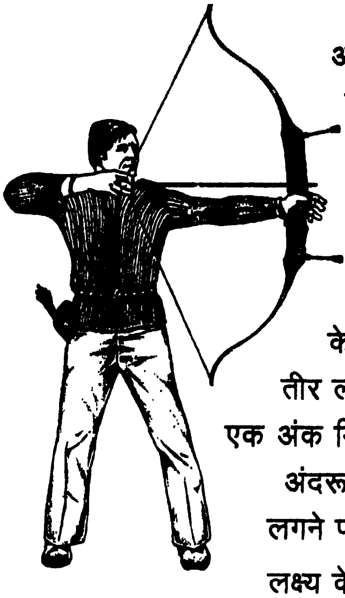

और आखिर में सुनहरा रंग भरा होता है।

इन्हीं रंगों के आधार पर अंक दिए जाते हैं। लक्ष्य के बाहरी सफेद घेरे में तीर लगने पर तीरंदाज को एक अंक मिलता है। इसी प्रकार अंदरूनी सफेद घेरे में तीर लगने पर 2 अंक मिलते हैं। लक्ष्य के अंदर की तरफ के घेरों में भी इसी तरह बढ़ते क्रम में अंक मिलते हैं। यानी सबसे अन्दर के घेरे में अगर तीर लगे तो तीरंदाज को दस अंक मिलेंगे।

इन्हीं रंगों के हिसाब से गणना करके तीरंदाज आसानी से अपने अंक पता कर लेता है।

इसी प्रकार छोटे 'लक्ष्य' में अंकों की गणना की जाती है। बड़े 'लक्ष्य' का उपयोग 90 और 70 मीटर जैसी बड़ी दूरियों के मुकाबले में होता है। ऐसे ही छोटे 'लक्ष्य' का प्रयोग कम दूरियों के लिए होता है।

चलो अब तीर-कमान पर आ जाएँ। क्रासबो कमान को छोड़कर अन्य कोई भी कमान तीरंदाज उपयोग कर सकते हैं। क्रासबो बड़ी पिस्तौलनुमा कमान होती है। कमान कितनी भी लम्बी हो सकती है। सभी कमानों में 'रेंज' को देखने के लिए एक उपकरण लगा होता है। पोशाक के लिए वैसे कोई नियम नहीं है बस यह कमान में उलझे नहीं। पोशाक पर तीरंदाज का नम्बर लगाना ज़रूरी होता है। तीरंदाज चश्मा पहन सकता है। इसके अलावा तीर से हथेली घायल न हो जाए इसके लिए आर्मगार्ड पहना जाता है। चमड़ों के दस्ताने के अलावा एक यंत्र भी होता है जिससे कमान की डोर का खिंचाव पता चलता है। कमान में एक बटन लगा होता है जिसे ढालू बटन कहा जाता है। इससे तीर को तेजी से छोड़ने में मदद मिलती है।

● 1988 में कलकत्ता में पाँचवी एशियाकप तीरंदाजी चैम्पियनशिप में भारत को पहली बार पदक मिले। एक कांस्य श्यामलाल ने पचास मीटर के मुकाबले में जीता और एक कांस्य भारतीय तीरंदाजी टीम ने जीता।

● अगले ही साल भारत ने एशियाई खेलों में दक्षिण कोरिया को हराकर स्वर्णपदक जीता। उन दिनों भारतीय टीम में लिम्बाराम, श्यामलाल और कालजेंग थे।

● महिला तीरंदाज पूर्णिमा मेहतो ने 1994 में पुणे चैम्पियनशिप में सात स्वर्ण पदक जीते थे। यह पूर्णिमा का व्यक्तिगत मुकाबलों में सिर्फ एक ही प्रतियोगिता में सबसे ज़्यादा पदक जीतने का रिकार्ड है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में फायनल मुकाबले से पहले भी कुछ छँटती मुकाबले होते हैं। आखिर में यानी फाइनल में व्यक्तिगत मुकाबलों में 12 तीरंदाज पहुँचते हैं। और टीम मुकाबलों में सर्वश्रेष्ठ आठ टीमें।

हर प्रतियोगिता के शुरू में अभ्यास या ट्रायल के लिए हर तीरंदाज को छह तीर दिए जाते हैं। हर तीरंदाज को निशाना साधने के लिए एक निश्चित समय मिलता है। जो तीरंदाज निर्धारित चक्र में सबसे ज़्यादा अंक जुटाता है वह विजयी होता है।

टाई या बराबरी की स्थिति में दोनों तीरंदाजों में से जिसने ज़्यादा बार दस अंक पाए हैं वह विजेता होता है। अगर इससे भी निर्णय नहीं होता तो सबसे अधिक बार नौ अंक पाने वाले को विजयी घोषित किया जाता है। मान लो फिर भी निर्णय नहीं हो रहा हो तो फिर दोनों तीरंदाजों या टीमों को संयुक्त रूप से विजेता माना जाता है।

तो ये तो थी फील्ड तीरंदाजी की मोटी-मोटी जानकारी। हम जानते हैं कि तुम भी बाँस के धनुष तीर बनाकर निशाना ज़रूर साधोगे। मगर ध्यान रखना, तुम्हारे तीर से किसी को चोट न लग जाए।

● प्रस्तुति : सुशील शुक्ल

चकती जमाओ

केवल मोटे गत्ते, तीन कील और एक लकड़ी के छोटे पटिए से एक मजेदार और माथापच्ची वाला खेल तैयार हो सकता है। चलो पहले यह सामग्री जुगाड़ लो।

अब परकार से या अलग-अलग आकार की कटोरियों को गत्ते पर रखकर छह गोले यानी चकतियाँ बना लो। इन्हें सफाई से काट लो। चकतियों के बीच में कील की मोटाई से थोड़ा बड़ा छेद कर लो। चकतियों को आकर्षक बनाने के लिए इनमें रंग भर सकते हो।

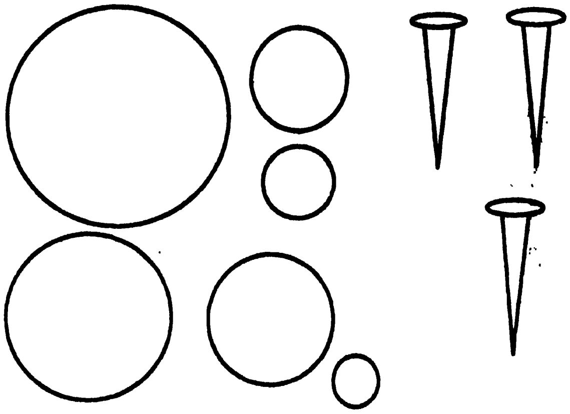

अब किसी भी एक कील पर इन छह चकतियों को इस तरह जमाओ कि सबसे बड़ी चकती नीचे, फिर उससे छोटी...उसके ऊपर... और इस तरह सबसे छोटी सबसे ऊपर रहे।

खेल अब शुरू होता है।

तुम्हें इन चकतियों को इसी तरह यानी उनके घटते आकार के क्रम में, किसी दूसरी कील पर जमाना है। हाँ लेकिन तीन शर्तें भी हैं। पहली तो ये कि एक बार में तुम एक ही चकती उठा सकते हो। दूसरी शर्त यह ध्यान में रखना है कि कोई भी छोटी चकती के ऊपर बड़ी चकती न आ पाए। तीसरी शर्त यह है कि चकतियों को कील के अलावा कहीं और नहीं रखना है। यानी तीसरी कील का उपयोग भी करना होगा।

एक बार इस खेल को खेलकर देखो। तुम्हें इन छह चकतियों को दूसरी कील पर जमाने में कुल कितनी चाल चलनी पड़ीं? एक चकती को उठाने का मतलब एक चाल होगा।

क्या तुम बता सकते हो कि तुम्हें इन चकतियों को दूसरी कील पर जमाने में कम से कम कितनी चालें लगेंगी?

चलो चकतियों की संख्या घटाकर देखते हैं और अब सिर्फ दो चकतियों से खेलते हैं। किसी भी एक कील पर एक बड़ी और उसके ऊपर एक छोटी चकती रख लो।

अब सबसे पहले तुम छोटी चकती को बाकी दो खाली कीलों में से किसी एक पर जमाओगे। यानी पहली चाल चली।

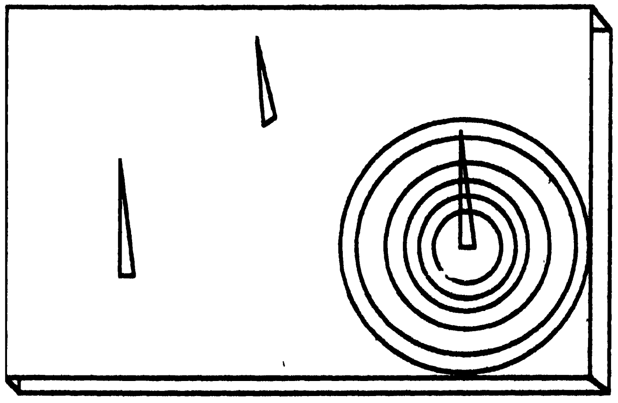

अब दूसरी बड़ी चकती को तीसरी कील पर जमाया, क्योंकि दूसरी कील पर तो इस चकती से छोटी चकती रखी है। यह हुई दूसरी चाल।

अब छोटी चकती को उठाकर बड़ी चकती के ऊपर रख दें। यानी सिर्फ तीन चाल हुईं। क्या इससे कम चालों में तुम ऐसा कर सकते हो?

अब इसी तरह तीन चकतियों से यह खेल खेलकर देखो। कम से कम कितनी चालों में तुम एक कील की तीनों चकती दूसरी किसी कील पर जमा दोगे?

शायद सात चालों में?

अब चार चकती लेकर खेलो।

चार चकतियों को लेकर खेलने पर कम से कम कितनी चालों की ज़रूरत होगी?

पाँच चकतियों का खेल तो हम पहले ही खेल चुके हैं। अब इन सबको एक साथ रखकर देखें तो पता चलेगा कि –

2 चकतियों में कम से कम = 3 चालों की

3 चकतियों में कम से कम = 7 चालों की

4 चकतियों में कम से कम = 15 चालों की और

5 चकतियों में कम से कम = 31 चालों की ज़रूरत हमें पड़ती है।

यदि तुम इन आंकड़ों पर गौर करोगे तो आसानी से समझ जाओगे कि एक चकती बढ़ाने पर चालों की ज़रूरत पिछली बार की चालों से दोगुनी से एक ज्यादा हो जाती है। जैसे – 2 चकतियों में तीन चालें

3 चकतियों में $3 \times 2 + 1 = 7$ चालें,

4 चकतियों में $7 \times 2 + 1 = 15$ चालें . . .

. . .

इसी तरह 6 में $31 \times 2 + 1 = 63$ चालों की ज़रूरत तो होगी ही। ●

फरवरी, 2001 के माथापच्ची के हल

1. 4 मिनिट 27 सेकेण्ड।
2. एक तरीका तो ये है।

   2 + 6 + 3 + 4 + 5 – 8 = 12

   9 + 8 – 1 + 3 – 5 – 2 = 12

   7 – 9 + 8 + 4 – 3 + 5 = 12
5. कुछ जोड़ियाँ

   12 X 63 = 756

   21 X 36 = 756

   36 X 93 = 2418

   62 X 39 = 2418

   24 X 63 = 1512

   42 X 36 = 1512
6. उन दोनों आदमियों से दुकानदार को पहले कुल पचास रुपए मिले। चूँकि दुकानदार ने पाँच रुपए नौकर को वापिस कर दिए थे। इसलिए दुकानदार को अब कुल 45 रुपए प्राप्त हुए। यानी दोनों आदमियों से साढ़े बाइस-साढ़े बाइस रुपए मिले। नौकर ने दोनों को दो-दो रुपए लौटा दिए। यानी पाँच में से चार रुपए लौटाए। और, एक रुपया नौकर ने खुद रख लिया। इस तरह कुल – 22.50 + 22.50 + 4 + 1 = 50 रुपए ही हुए।

वर्ग पहेली

114 का हल

ए	क	था	ल	मो	ती	से	भ	रा
	सी		दा		न		ती	र
आ	दा	ब		ब		दू	जा	
	का		प	त्ती		भ		शा
जु	र	मा	ना		ब	र	ग	द
ल्म		यू		धु	री		ल	
	का	स		आँ		म	न	का
आ	ज		का		बु		अं	
का	ल	क	रे	सो	आ	ज	क	रे

सही हल भेजने वाले पाठक हैं – खुरशीद अनवर राही, जावद, नीमच; नाहिद खान, मो. इस्माइल, खण्डवा; म. प्र.।

इन्हें मार्च, 2001 का अंक भेजा जा रहा है।

धारावाहिक : तेरहवीं किश्त

प्यारा कुनबा

निकोलाई नोसोव

अब तक तुमने पढ़ा कि मीश्का हमेशा कुछ नया करना चाहता है। मुर्गी-पालन नाम की एक किताब लेकर वह अपने दोस्त कोल्या के साथ इन्क्यूबेटर (मुर्गी के अण्डे को सेने वाली मशीन) बनाने की तैयारी करता है। वे गाँव से मुर्गी के ताज़े अण्डे लाते हैं। फिर इन्क्यूबेटर बनाने के लिए सामान की जुगाड़ करते हैं। और फिर शुरुआत होती है मुर्गी के अण्डों को सेने की। इसमें एक बड़ा काम था ताप को एक निश्चित डिग्री पर बनाए रखना। मीश्का और कोल्या बारी-बारी से सोते-जागते हैं और अण्डों की देखभाल करते हैं। एक दिन उन दोनों के साथ पढ़ने वाला कोस्त्या, मीश्का के घर आता है। उसे इन्क्यूबेटर के बारे में पता चल जाता है।

रात-रात भर जागकर इन्क्यूबेटर की देखभाल करने के कारण मीश्का को हर कभी और हर कहीं नींद आ जाती थी। और, जब मीश्का सो रहा होता तो कोल्या उसकी तस्वीर बनाता। सोते हुए मीश्का की तस्वीर कोल्या ने अपनी कक्षा के लड़कों को दिखाई तो उन्होंने मीश्का की बहुत हँसी उड़ाई। मीश्का ने गुस्सा होकर कोल्या से कहा कि अब से इन्क्यूबेटर की देखभाल तुम करो। कुछ दिन कोल्या ने देखभाल की। इसी दौरान एक बार ताप बहुत नीचे चला गया। पर जल्द ही उसने ताप को सही स्थिति में पहुँचा दिया। उसने यह बात किसी को बताई नहीं, पर उसे मन में यह ज़रूर लगता रहा कि अब अण्डों में से चूज़े नहीं निकलेंगे।

इन्क्यूबेटर पर ध्यान देने के कारण दोनों पढ़ाई नहीं कर पा रहे थे। उन्हें कम नम्बर मिलते हैं। उनकी कक्षा के सभी साथी छुट्टी के बाद इन दोनों दोस्तों को रोककर कारण पूछते हैं। तब कोस्त्या सबको बता देता है कि ये लोग इन्क्यूबेटर में लगे हैं। फिर क्या था, सभी मिलकर ताप की निगरानी करने में मदद देने को तैयार हो जाते हैं।

प्रकृति प्रेमी मण्डल के सारे सदस्य इन्क्यूबेटर की देखरेख में लग जाते हैं। वे इसके लिए टाइम-टेबिल भी बनाते हैं। दोस्तों की मदद मिलने से मीश्का और कोल्या को थोड़ी राहत मिलती है। वे पढ़ाई की तरफ भी ध्यान देना शुरू कर देते हैं। और प्रकृति प्रेमी मण्डल का अपना काम भी पूरा कर लेते हैं। आखिर इक्कीसवाँ दिन भी आ जाता है। अण्डों में से चूज़े निकलने का दिन। इस दिन कोल्या और मीश्का की ही बारी है। पूरा दिन इन्तज़ार में निकल जाता है लेकिन चूज़े नहीं निकलते। सभी इन्क्यूबेटर को घेरकर उस पर टकटकी लगाए हुए हैं। अब आगे . . . .

अपराधी कौन?

लड़के चुप्पी साधे चारों ओर खड़े थे। ''शायद वे निकलें ही न,'' सेन्या बोब्रोव बोला। ''क्यों, तुम्हारा क्या ख्याल है?''

मीश्का ने कंधे उचका दिए, ''मैं कैसे बता सकता हूँ? मैं कोई मुर्गी तो हूँ नहीं! चूज़े निकलने के बारे में मैं क्या जानूँ?''

हर कोई एक साथ बोलने लगा। किसी ने कहा, चूज़े निकलेंगे ही नहीं, किसी ने कहा वे अभी भी निकल सकते

हैं, तो दूसरों ने कहा या तो वे निकलेंगे या नहीं निकलेंगे। आखिर वीत्या स्मिर्नोव ने सारी बहस बन्द कर दी।

"अभी कोई पक्की बात कहना कठिन है," वह बोला। "दिन अभी पूरा नहीं हुआ है। हमें पहले जैसे ही काम जारी रखना चाहिए। अब ड्यूटीवाले लड़कों को छोड़कर सब अपने-अपने घर चले जाएँ।"

लड़के घर चले गए। मीश्का और मैं अकेले रह गए। हमने अण्डों पर फिर एक नज़र डाली। ताकि अगर कहीं एकाध छोटी-सी दरार हो, तो दिखाई दे जाए, लेकिन कुछ भी नहीं दिखाई दिया। मीश्का ने ढक्कन बन्द कर दिया।

"ठीक है, मुझे कोई परवाह नहीं कि क्या होता है! वैसे भी अभी से परेशान होना ठीक नहीं। शाम तक हम इन्तज़ार करेंगे और अगर तब भी कुछ न हुआ, तो फिर हम चिंता करना शुरू कर सकते हैं।"

हमने निश्चय किया कि ज़रा भी फिक्र न करेंगे और शांति से इन्तज़ार करेंगे। लेकिन ऐसा कहना करने से आसान था। कितनी ही कोशिश करने पर भी हम चिंता किए बिना न रह सके और हर दस मिनट बाद हम इन्क्यूबेटर में झाँकते रहे। दूसरे लड़कों को भी चिन्ता थी पूछने के लिए आते ही रहे। हर किसी का एक ही प्रश्न था – "क्यों, कैसा चल रहा है?"

कुछ समय बाद मीश्का ने उत्तर देना छोड़ दिया और सिर्फ कंधे उचकाना शुरू कर दिया, लेकिन उसको इतनी बार कंधों को उचकाना पड़ा कि शाम तक वे उठकर उसके कानों तक आ गए।

शाम बीतने के साथ लड़कों का आना भी बन्द हो गया। वीत्या ही सब के बाद आया। बहुत देर तक वह हमारे साथ बैठा।

"कहीं तुमसे हिसाब में गलती तो नहीं हो गई?" वह बोला।

हमने फिर से गिनना शुरू किया लेकिन उसमें कहीं कोई गलती नहीं थी। यह इक्कीसवाँ दिन था और वह भी अब ढलने लगा था, लेकिन चूज़ा एक भी न निकला था।

"कोई बात नहीं," वीत्या ने हमें दिलासा देने के लिए कहा। "हम सबेरे तक इंतज़ार कर लेंगे। वे शायद रात भर में निकल आएँ।"

मैंने अपनी माँ से मीश्का के यहाँ रहने की अनुमति ले ली और हमने सारी रात बैठने तथा निगरानी करने का निश्चय किया। इन्क्यूबेटर के पास हम बहुत देर तक चुपचाप बैठे रहे। बोलने के लिए हमारे पास अब कुछ न रह गया था। हम अब ख्याली पुलाव भी न पका सकते थे, क्योंकि हमारी सारी आशाएँ टूट चुकी थीं। जल्दी ही ट्रामें बन्द हो गई और सब ओर सन्नाटा छा गया। खिड़की से दिखनेवाला सड़क का लैम्प भी बुझ गया। मैं सोफे पर लेट गया। मीश्का कुर्सी पर बैठा-बैठा ऊँघ रहा था, लेकिन एक बार वह लगभग गिर ही पड़ा था, इसलिए वह आकर सोफे पर ही मेरे पास लेट गया और हम सो गए।

जब हम जागे, तो दिन निकल चुका था, और हर चीज़ पहले जैसी थी। इन्क्यूबेटर में अण्डे वैसे के वैसे पड़े हुए थे। न किसी में कोई बाल आया था और न किसी से कोई आवाज़ ही आ रही थी। सब लड़के बहुत ही निराश हुए। "हो क्या सकता है?" उन्होंने पूछा।

"हमने सभी तो हिदायतों का ध्यान से पालन किया है, या नहीं किया है?"

"मैं कुछ नहीं जानता," मीश्का ने कंधे उचकाते हुए उत्तर दिया।

अकेला मैं ही जानता था कि क्या हुआ है। जिस रात को मैं असावधानी से सोता रह गया था, भ्रूण बेशक उसी रात को नष्ट हो चुके थे। ताप नीचा हो गया था और वे ठण्ड से मर गए थे – अपनी ज़िन्दगी के ठीक से शुरू होने के पहले ही मर गए थे। सब के सामने मैंने अपने-आप को अपराधी अनुभव किया। उनकी सारी मुसीबतें बेकार जाएँगी और यह सब बस मेरे कारण! लेकिन मैं उनको इसी समय यह सब न बता पाया। मैंने फैसला किया कि मैं सारा दोष बाद में मान लूँगा, जब लड़के इस घटना को भूल जाएँगे और चूज़े न पाने की बात उन्हें इतनी बुरी न लगेगी।

उस दिन स्कूल में हम सब लोग बहुत ही उदास रहे। सब लड़के हमारी ओर इतनी हमदर्दी के साथ देख रहे थे, मानो हम किसी की मौत का शोक मना रहे हों। और जब सेन्या बोब्रोव के मुँह से अपनी आदत की ही वजह से हमारे लिए "चूज़ादीन" निकल गया, तब सभी लड़के उसके ऊपर टूट पड़े और कहने लगे कि उसे अपने पर शर्म आनी चाहिए। मीश्का को और मुझे बड़ी परेशानी हुई।

"काश कि वे हमें कोसते!" मीश्का बोला।

"और क्यों?"

"अच्छा, ज़रा सोचो कि उन्होंने हमारे लिए क्या-क्या किया है। हमसे नाराज़ होने का उन्हें पूरा-पूरा अधिकार है।"

स्कूल के बाद कुछ लड़के हमारे यहाँ आए, लेकिन जल्द ही उन्होंने आना बन्द कर दिया। सिर्फ कोस्त्या वेव्यात्किन एक-दो बार आया। वही एक ऐसा था कि जिसने अब तक आशा नहीं छोड़ी थी।

"देखा," मीश्का ने मुझसे कहा। "अब सब लड़के हमसे नाराज़ हो गए हैं। और मैं पूछता हूँ, भला क्यों? हर कोई गलती कर ही सकता है।"

"लेकिन खुद तुम्हीं ने तो कहा था कि उन्हें नाराज़ होने का अधिकार है।"

"हाँ, है," मीश्का ने चिढ़कर उत्तर दिया। "और सो तुम्हें भी है। मैं जानता हूँ कि यह सब मेरा ही दोष है।"

"भला, यह तुम्हारा दोष क्यों है? कोई भी तुम पर किसी बात का दोष नहीं लगा रहा। न ही इसमें तुम्हारा ज़रा भी कसूर है," मैं बोला।

"नहीं, यह मेरी ही गलती है। लेकिन तुम मुझ पर बहुत गुस्सा तो न होगे न, बोलो?"

"भला क्यों?"

"मैं इतना निकम्मा जो हूँ! यह सब मेरी बदकिस्मती

के कारण है, कुछ करूँ, उसका कभी कुछ अच्छा नतीजा न निकलेगा।''

''यह ठीक नहीं है। मुझसे ही हर बात बिगड़ जाती है,'' मैंने कहा। ''यह सब मेरा ही कसूर है।''

''नहीं, तुम्हारा दोष नहीं है। मेरा ही अपराध है। मैंने ही चूज़ों को मारा है।''

''तुम कैसे उन्हें मार सकते हो?''

''मैं तुम्हें बता दूँगा, लेकिन पहले मुझपर नाराज न होने का वचन दो,'' मीश्का बोला। ''एक बार मुझे सुबह–सबेरे नींद आ गई और जब मैं जागा और तापमापी की ओर देखा, तो पारा 40 डिग्री पर था। मैंने अण्डों को ठण्डा करने के लिए तुरन्त ढक्कन खोल दिया, लेकिन मेरे ख्याल से बहुत देर हो चुकी थी।''

''यह कब की बात है?''

''पाँच दिन पहले की।''

मीश्का अपराधी तथा दुखी लग रहा था।

''ख़ैर, तुम चिन्ता न करो,'' मैंने उससे कहा। ''अण्डे उसके पहले ही खराब हो चुके थे।''

''किसके पहले?''

''उस दिन, तुम्हारे ज्यादा देर तक सोये रहने के पहले।''

''किसने खराब किया उन्हें?''

''मैंने।''

''तुमने? कैसे?''

''मैं ज्यादा सो गया और ताप नीचे चला गया और अण्डे खराब हो गए।''

''यह कब हुआ?''

''दसवें दिन।''

''तुमने पहले क्यों नहीं बताया?''

''मुझे कबूल करते डर लग रहा था। मैंने सोचा कि शायद चूज़े न ही मरे हों, लेकिन अब मैं जानता हूँ कि वे मर गए, और मैंने ही उन्हें मारा है।''

''और तब भी तुमने लड़कों से वह सारा काम बेकार करवाया,'' मेरी तरफ गुस्से से देखते हुए मीश्का ने कहा, ''सिर्फ इसलिए कि कबूल करते तुम्हें डर लगता था।''

''मैंने सोचा था कि शायद सब कुछ ठीक ही निकल आएगा। और लड़के किसी भी हालत में काम जारी रखने का ही निश्चय करते, नहीं तो हमें कभी पता न चलता कि चूज़े मरे हैं या नहीं।''

''अच्छा, जारी रखने का ही निश्चय करते!'' मीश्का ने क्रोध से कहा। ''कुछ भी हो, तुम्हारा फर्ज़ था कि शुरू में ही सब कुछ बता देते, जिससे बजाय इसके कि तुम सब की तरफ से फैसला कर लो, हम सब मिलकर सोच–विचार करके फैसला लेते।''

''देखो,'' मैं बोला। ''मेरे ऊपर क्यों बिगड़ रहे हो? तुमने खुद अपनी बात पहले क्यों नहीं बताई? तुम भी तो ज्यादा सोए न, या नहीं?''

''हाँ, सोया,'' मीश्का ने पश्चात्ताप के स्वर में कहा। ''मैं सचमुच सूअर हूँ। चाहो तो मेरी नाक पर मुक्के मार लो।''

''मैं ऐसा कुछ नहीं करनेवाला। लेकिन देखना, मैंने जो कुछ तुम्हें बताया है, वह जाकर दूसरों से मत कह देना।'' मैं बोला।

''मैं कल उन्हें बता दूँगा। तुम्हारे बारे में नहीं, खुद अपने बारे में। हर किसी को मालूम हो जाए कि मैं कैसा सूअर हूँ। मेरी यही सजा होगी।''

''ठीक है, तब मैं भी कबूल कर लूँगा,'' मैंने कहा।

''नहीं, तुम ऐसा मत करना।''

''क्यों?''

''देखो, तुम जानते हो कि वे कैसे लोग हैं। वे हम पर हँसते हैं, क्योंकि हम हर काम मिलकर करते हैं। हम स्कूल साथ–साथ जाते हैं, अपने पाठ साथ–साथ तैयार करते हैं, और कम नम्बर भी साथ–साथ ही पाते हैं। अब वे कहेंगे कि निगरानी करने में ज़्यादा सो जाने में भी हमने एक–दूसरे का साथ दिया है।''

''वे जो चाहें, कहें,'' मैंने कहा। ''अलावा इसके क्या यह हो सकता है कि वे तुम्हारी खिल्ली उड़ाएँ और मैं खड़ा–खड़ा देखता रहूँ?''

(अगले अंक में जारी)

सभी चित्र : सौरभ दास

माथापच्ची

(1)

ये हैं आठ अंक कार्ड! हरेक पर कोई न कोई अंक लिखा है! यहाँ चार-चार अंक कार्डों को दो लाइनों में जमाया है। तुम्हें बस थोड़ी सी उठापटक करनी है... इन आठ कार्डों में से किन्हीं दो कार्डों को इस तरह बदलना है कि दोनों पंक्तियों के कार्डों का जोड़ बराबर हो जाए।

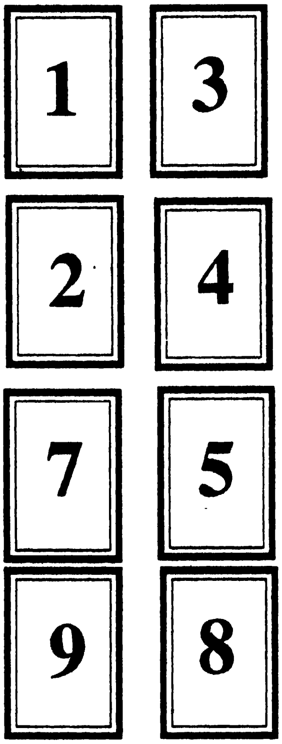

(2)

यहाँ अलग–अलग आकारों के कार्डों की एक पंक्ति दिखाई दे रही है। हर कार्ड का एक नम्बर है, लेकिन बीच के तीन कार्ड – A B C के नम्बर गायब हैं। चूँकि इन सभी में एक खास रिश्ता है इसलिए इन गायब नम्बरों का पता लगाया जा सकता है।

तुम ज़रा अंदाज़ा तो लगाओ वे नम्बर क्या होंगे?

(3)

9 9 9 9

ये चार नौ एक ही तरफ मुँह करके एक लाइन में खड़े हैं। देखने में तो ये नौ हजार नौ सौ निन्यानवे लगते हैं। तुम्हें इनको इस तरह जमाना है कि उस स्थिति में ये कुल सौ होकर ही रह जाएँ।

(4)

तुम्हें एक ऐसी संख्या ढूँढना है जिसमें चाहे 6 जोड़ें या चाहे उसे 6 से गुणा करें, हल एक ही आएगा।

(5)

फल, कर, मान, खोल, काल, दर....!
ऐसे अनगिनत शब्द हैं जिनके दो अर्थ निकलते हैं अब फल को ही ले लो। फल, परीक्षाफल में भी है और फल-फूल में भी। लेकिन बस थोड़े से फर्क अर्थ में। अच्छा क्या तुम महज पाँच मिनिट में ऐसे ही तीन और शब्द ढूँढ सकते हो।

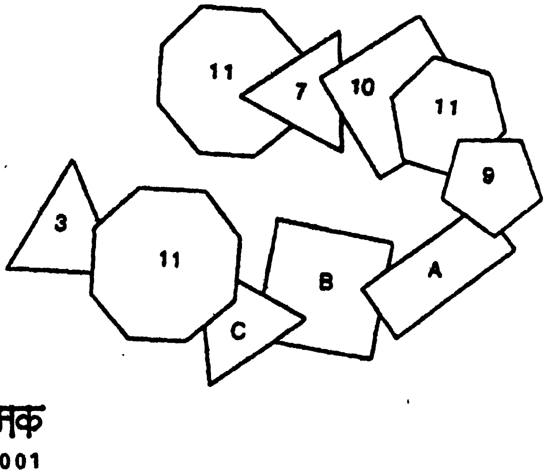

(6)

इस खाली बोतल के मुँह पर एक कागज की लम्बी-सी पट्टी रखी है। और इस पट्टी से ढँके मुँह के ऊपर तीन सिक्के। ये तीनों सिक्के अलग-अलग आकार के हैं। सबसे नीचे सबसे बड़े आकार का सिक्का उसके ऊपर उससे छोटा और फिर सबसे ऊपर सबसे छोटा।

तुम्हें इस कागज की पट्टी को अलग करना है। इस दौरान न तो तुम सिक्के को छू सकते हो, न ही बोतल को।

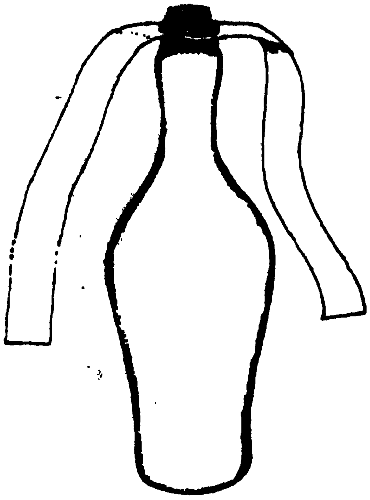

(7)

राशिद और सुनील एक क्रिकेट मैच की बातें कर रहे थे। राशिद ने बताया कि उसने उस मैच में बिना आऊट हुए 65 रन बनाए। स्कोर तो सुनील ने भी बताया मगर कुछ पहेलीनुमा तरीके से।

सुनील ने कहा कि अगर उसके बनाए रनों की संख्या के तिगुने में 21 जोड़ दिया जाए तो परिणाम 66 आएगा। क्या तुम राशिद को बता सकते हो कि सुनील ने कितने रन बनाए थे।

(8)

101–1 = 102

जी हाँ! ये समीकरण थोड़ी देर पहले तक सही था। जानते हैं ये सारी करामात इन अंकों की है।
किसी एक अंक की शरारत ने पूरे समीकरण को गलत कर दिया।
क्या तुम बता सकते हो कि वो कौन-सा अंक है।

(9)

आशी और दीपक ने होली पर ढेर सारे गुब्बारे खरीदे। फिर थोड़ी ही देर बाद पता नहीं क्या सोचकर उन दोनों ने उनमें से 90 प्रतिशत गुब्बारे वापस कर दिए। इस वापसी के बदले दुकानदार से उन्हें 40 रुपए वापस मिले। क्या तुम बता सकते हो कि पहले उन्होंने कुल कितने रुपए के गुब्बारे खरीदे होंगे?

(10)

तुमने गधा तो देखा ही होगा! इस चित्र को देखो। ये गधे जैसा तो दिखता है लेकिन क्या सचमुच गधा है? नहीं, तो फिर ये क्या है।

तरंगें : ऊर्जा की वाहक

तरंग किसी माध्यम में से होकर गुज़रती है, परन्तु तरंग के साथ–साथ माध्यम स्वयं स्थानांतरित नहीं होता है। तरंग की ऊर्जा स्थानांतरण की दिशा में यात्रा करती है। अनुप्रस्थ (ट्रांसवर्स) तरंगों में, माध्यम के कण, तरंग के स्थानांतरण की दिशा के लम्बवत कम्पन करते हैं। अनुदैर्ध्य (लांगट्यूडिनल) तरंगों में, माध्यम के कण, तरंग के स्थानांतरण की दिशा में ही कम्पन करते हैं। किसी तरंग की माप और आकार का वर्णन उसकी तरंगदैर्ध्य (वेवलेंथ) और उसके विस्तार (एम्पलीट्यूड) से किया जाता है।

पानी की तरंगें

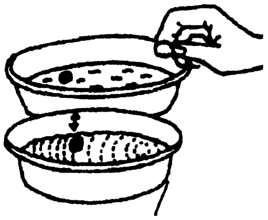

***आवश्यक सामान** – कॉर्क, पानी का बड़ा बर्तन, कुछ बाट*

पानी में अलग-अलग ऊँचाईयों से बाट गिराओ जिससे अलग-अलग शक्ति की तरंगें बनें। तरंग की शक्ति का अनुमान कॉर्क के ऊपर-नीचे होने की गति से लगाओ। अब पानी की गहराई को बदलो और उससे तरंगों की ऊँचाई और कॉर्क के ऊपर-नीचे होने की दर पर हुए प्रभाव को नोट करो।

तरंगों को तोड़ना

***आवश्यक सामान** –*
पानी का एक बड़ा टब या ट्रे
बड़े और भारी पत्थर

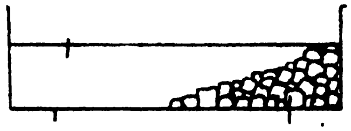

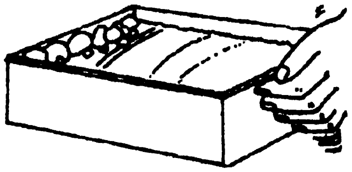

ट्रे या टब को हिलाकर पानी में अलग-अलग आकार की तरंगें बनाओ। जब पानी छिछला होगा तभी तरंगें टूटेंगी – यानी जब पानी की गहराई लहरों के विस्तार से कम होगी।

अनुप्रस्थ तरंग दोलक

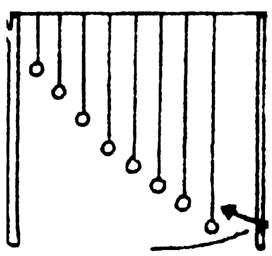

***आवश्यक सामान** – बाट (एक समान), डोरी, सहारे के लिए खूँटें*

चित्र में दिखाए अनुसार अलग-अलग लम्बाइयों की डोरी में बाट बाँधकर दोलक लटकाओ। ये दोलक ऊपर की डोरी से एक-दूसरे से बराबर दूरी पर बँधें हों। अब एक दोलक को ऊपर वाली डोरी से 90 डिग्री के कोण पर हिलाओ। इससे धीरे-धीरे बाकी दोलक भी हिलने लगेंगे और ऊपर वाली डोरी में तरंगें बनेंगी।

तरंगें : ऊर्जा की वाहक

तरंग किसी माध्यम में से होकर गुज़रती है, परन्तु तरंग के साथ–साथ माध्यम स्वयं स्थानांतरित नहीं होता है। तरंग की ऊर्जा स्थानांतरण की दिशा में यात्रा करती है। अनुप्रस्थ (ट्रांसवर्स) तरंगों में, माध्यम के कण, तरंग के स्थानांतरण की दिशा के लम्बवत कम्पन करते हैं। अनुदैर्ध्य (लांगट्यूडिनल) तरंगों में, माध्यम के कण, तरंग के स्थानांतरण की दिशा में ही कम्पन करते हैं। किसी तरंग की माप और आकार का वर्णन उसकी तरंगदैर्ध्य (वेवलेंथ) और उसके विस्तार (एम्पलीट्यूड) से किया जाता है।

पानी की तरंगें

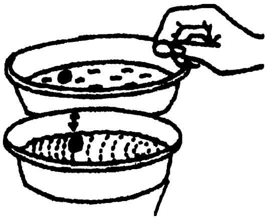

आवश्यक सामान *– कॉर्क, पानी का बड़ा बर्तन, कुछ बाट*

पानी में अलग-अलग ऊँचाईयों से बाट गिराओ जिससे अलग-अलग शक्ति की तरंगें बनें। तरंग की शक्ति का अनुमान कॉर्क के ऊपर-नीचे होने की गति से लगाओ। अब पानी की गहराई को बदलो और उससे तरंगों की ऊँचाई और कॉर्क के ऊपर-नीचे होने की दर पर हुए प्रभाव को नोट करो।

तरंगों को तोड़ना

आवश्यक सामान *–*
पानी का एक बड़ा टब या ट्रे
बड़े और भारी पत्थर

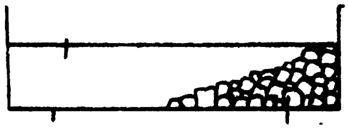

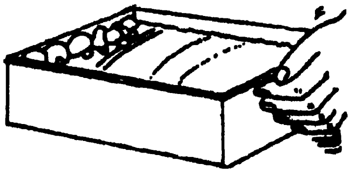

ट्रे या टब को हिलाकर पानी में अलग-अलग आकार की तरंगें बनाओ। जब पानी छिछला होगा तभी तरंगें टूटेंगी – यानी जब पानी की गहराई लहरों के विस्तार से कम होगी।

अनुप्रस्थ तरंग दोलक

आवश्यक सामान *– बाट (एक समान), डोरी, सहारे के लिए खूँटें*

चित्र में दिखाए अनुसार अलग-अलग लम्बाइयों की डोरी में बाट बाँधकर दोलक लटकाओ। ये दोलक ऊपर की डोरी से एक-दूसरे से बराबर दूरी पर बँधें हों। अब एक दोलक को ऊपर वाली डोरी से 90 डिग्री के कोण पर हिलाओ। इससे धीरे-धीरे बाकी दोलक भी हिलने लगेंगे और ऊपर वाली डोरी में तरंगें बनेंगी।

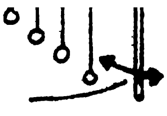

मेक्सिकन तरंग

इसमें छात्रों की लाईन जितनी लम्बी होगी इसका असर भी उतना ही अधिक प्रभावशाली होगा। परन्तु अगर तुम खुद इस तरंग का एक भाग हो तो इसे देख पाना उतना आसान नहीं होगा।

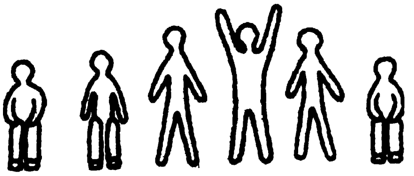

इसमें कई छात्र एक सीधी रेखा में खड़े होते हैं। फिर किसी एक तरफ से एक के बाद एक छात्र बैठना शुरू करता है। जब तक पाँचवाँ छात्र बैठे तब तक पहला छात्र फिर से खड़ा हो जाता है। इस तरह पूरी रेखा में एक तरंग-सी बनती दिखती है।

सिरकियों से तरंगें

आवश्यक सामान – प्लास्टिक की स्ट्रॉ या सिरकियाँ/सीकें, रबर या कागज़ की पट्टी या सेलोटेप, गोंद

स्ट्रॉ, सींकों या सिरकियों को एक-समान लम्बाई का काटें और उन्हें सेलोटेप या कागज़ की लम्बी पट्टी पर चिपकाओ। कक्षा के लिए 3 मीटर लम्बाई का सेलोटेप उपयुक्त होगा। सेलोटेप के उपयोग का एक लाभ है कि तुमको सींकों को चिपकाने के लिए गोंद नहीं लगाना पड़ेगी। परंतु सीकें भारी होने पर उनके सेलोटेप से गिरने का डर रहेगा। साइकिल की पुरानी ट्यूब की पट्टी, मजबूत और अधिक उपयुक्त होगी। इस पट्टी को हल्के से घुमाने या मरोड़ने से इसमें तरंगें पैदा होंगी। अपने दोस्तों की सहायता से विभिन्न लम्बाईयों की सीकों/स्ट्रा और पट्टियों के साथ प्रयोग करो जिससे कि अंत में बढ़िया तरंग बने।

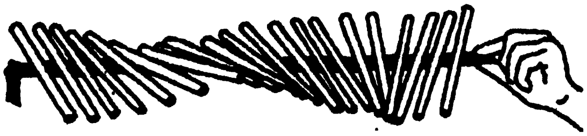

अनुदैर्ध्य तरंगें

आवश्यक सामान – कंचे या सिक्के

सीधी रेखा में खड़े छात्रों की लाईन से भी अनुदैर्ध्य तरंगों का मॉडल बन सकता है। जैसे ही किसी छात्र को पीछे से धक्का लगे वो जल्दी से अपने आगे वाले को धक्का दे।

इस सिद्धान्त को कंचे और सिक्कों से भी दर्शाया जा सकता है।

इन प्रयोगों को करने पर तुमने क्या देखा, क्या पाया, कहाँ दिक्कत आई हमें ज़रूर लिखना।

(वी. एस. ओ. साइंस टीचर्स हेंडबुक से साभार।)

सूक्ष्मदर्शी से . . .

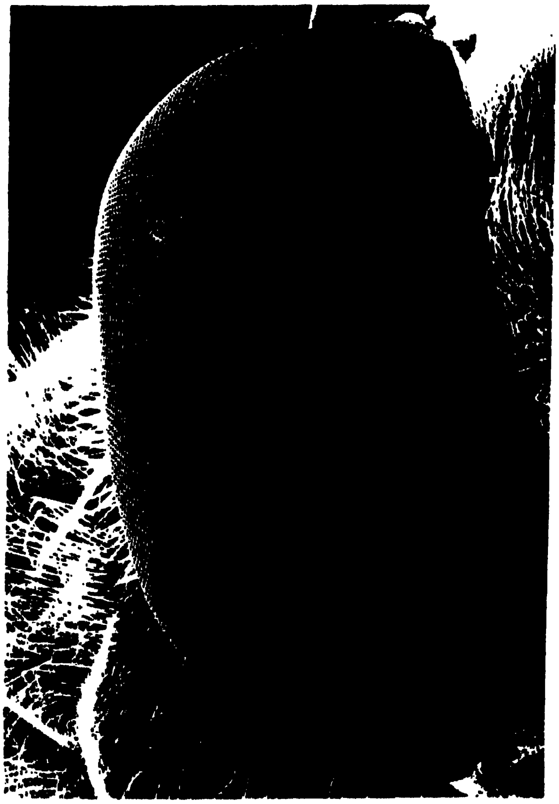

यहाँ मक्खियों के ही किसी अंग को बड़ा करके दिखाया गया है यह तो पक्का है पर क्या ? ये हैं मक्खियों की आँखें नहीं आँख। है तो एक-एक ही आँख का चित्र लेकिन मक्खियों की आँख संयुक्त आँख होती है। मतलब यह कि एक आँख में कई आँखें। इनमें से ऊपर वाला चित्र मधुमक्खी की आँख का है और नीचे वाला साधारण मक्खी की आँख का।

चित्र सौजन्य ''अण्डर द मायक्रोस्कोप''

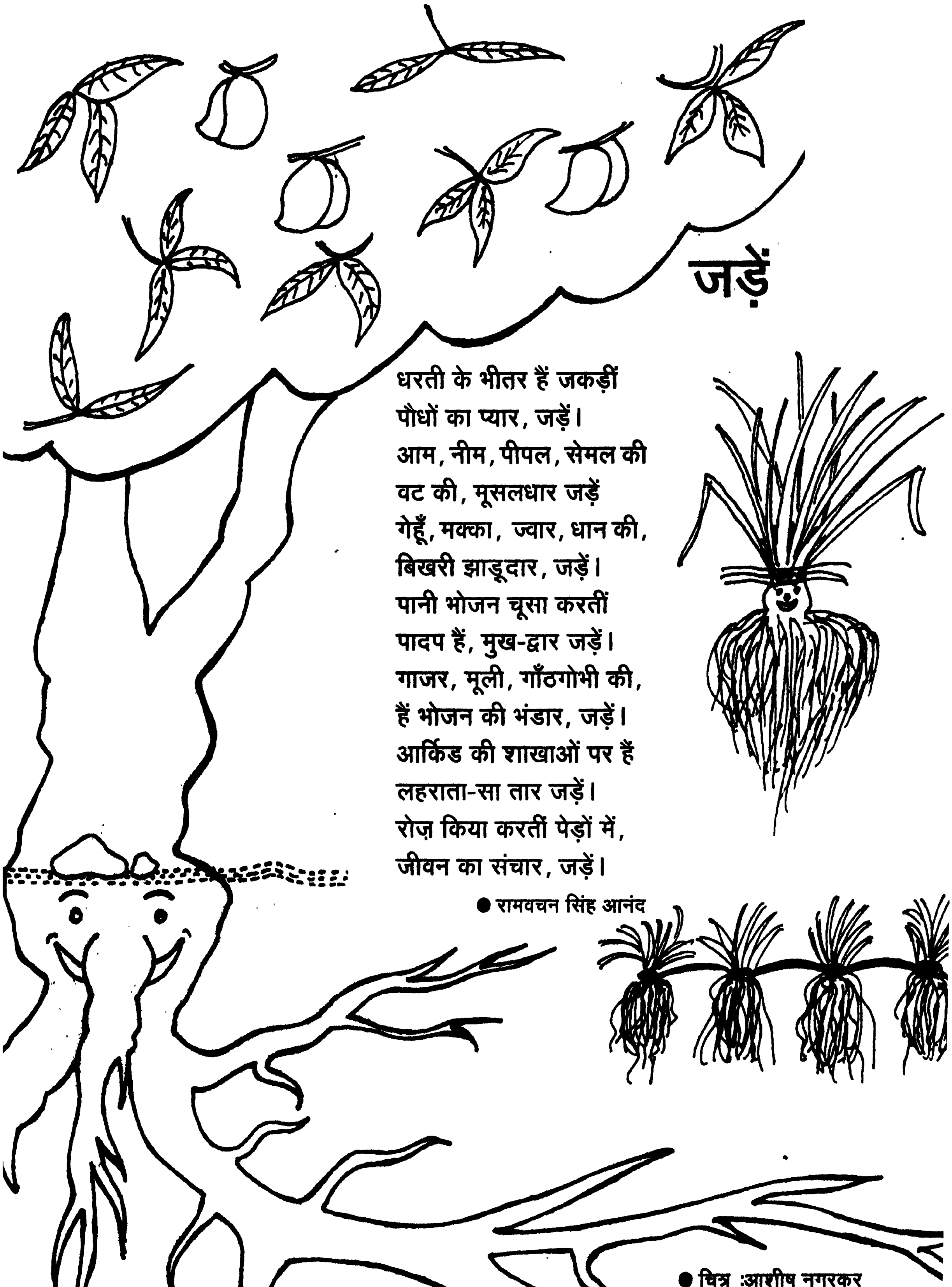

जड़ें

धरती के भीतर हैं जकड़ीं
पौधों का प्यार, जड़ें।
आम, नीम, पीपल, सेमल की
वट की, मूसलधार जड़ें
गेहूँ, मक्का, ज्वार, धान की,
बिखरी झाड़ूदार, जड़ें।
पानी भोजन चूसा करतीं
पादप हैं, मुख-द्वार जड़ें।
गाजर, मूली, गाँठगोभी की,
हैं भोजन की भंडार, जड़ें।
आर्किड की शाखाओं पर हैं
लहराता-सा तार जड़ें।
रोज़ किया करतीं पेड़ों में,
जीवन का संचार, जड़ें।

● रामवचन सिंह आनंद

● चित्र :आशीष नगरकर

मैं चकमक का नियमित पाठक हूँ। मेरी रचनाएँ चकमक के कई अंकों में प्रकाशित होती आ रही हैं।

मेरा आपसे निवेदन है कि चकमक में 'खेल कागज़ का' स्तम्भ पहले प्रकाशित किया जाता था, जो कि कुछ समय से बंद हो गया है। इस स्तम्भ के माध्यम से कला के प्रति रूचि बढ़ती थी। इसलिए इस स्तम्भ को फिर से प्रकाशित करना शुरू कर दें। हम आपके बहुत आभारी रहेंगे। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप मेरे सुझाव पर ध्यान देते हुए खेल कागज का स्तम्भ पुन: प्रकाशित करना प्रारंभ करेंगे।

● **सोहित अग्रवाल, छतरपुर, म.प्र.**

मैं चकमक का कई वर्षों से पाठक हूँ। यह हकीकत में रुचिकर पत्रिका भी है। लेकिन इस बार पत्रिका बहुत देर से प्राप्त हुई। मकर संक्रान्ति का लेख पढ़ा इसमें कुछ बातों पर मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हूँ।

इसमें तीसरे पैरा में लिखा है सूर्य अपनी जगह स्थिर ही है। यह गलत है सूर्य अपनी आकाशगंगा के केन्द्र के चारों ओर चक्कर लगाता है। दूसरी बात आपने इस लेख में जितने चित्र दिए हैं। उन चित्रों में पृथ्वी की कक्षा या पृथ्वी जिस पथ पर सूर्य की परिक्रमा करती है दीर्घवृत्तीय दिखाया है। ये तो सही है। परन्तु सूर्य पृथ्वी की दीर्घवृत्तीय कक्षा की किसी एक नाभि पर स्थित है न कि दीर्घवृत्तीय कक्षा के केन्द्र पर। आपने चित्र में सूर्य को दीर्घवृत के केन्द्र पर दिखाया है। जबकि सूर्य दीर्घवृत की दो नाभियों में से किसी एक नाभि पर (माना जाता) है।

साईक्लिंग वाले लेख में दूरी की इकाईयाँ मी., कि.मी. आदि में दी हैं अच्छा होता कि पूरे लेख की इकाईयाँ एक ही मात्रक में होतीं।

चकमक में आए नए आकर्षक कैलेण्डर के लिए एकलव्य को धन्यवाद!

● **मोईउद्दीन बुरहानी, शुजालपुर, म.प्र.**

चकमक का 182 वाँ का अंक पढ़ा। इस बार आपने वही शुरूआत की जिसे मैंने भी सोच रखा था। इससे बच्चों के चित्रों को एक कहानीनुमा रूप में पेश किया जा सकेगा और उनके चित्र एक कहानी से जुड़ जाएँगे तो उन्हें और मज़ा आएगा। वास्तव में आजकल जो बालपत्रिकाएँ निकल रहीं हैं वे व्यवसायिकता की होड़ में शामिल हैं इस कारण वे बच्चों के लिए मनोरंजक सामग्री तो जुटा देती हैं पर कोरी।

चकमक उन्हें कुछ करके सिखाता है और खेल-खेल में मनोरंजन भी करा देता है। साथ ही साथ चकमक ही एकमात्र ऐसी पत्रिका है जो बच्चों को अपनी अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध कराती है और बच्चों की रचनाओं को गंभीरता से लेती है। इसके लिए एकलव्य की चकमक टीम बधाई की पात्र है।

बच्चों से निबंध इत्यादि भी आमंत्रित किए जाएँ और विषय देकर चित्र या कविताएँ मँगवाई जाती रहें तो पत्रिका का आकर्षण और बढ़ सकता है। वैसे भी यह बच्चों के लिए चुम्बक बन पड़ी है।

● **चम्पालाल कुशवाहा, होशंगाबाद, म.प्र.**

यहाँ से काट लें

चकमक

छह माह	एक साल	दो साल	तीन साल	आजीवन
50.00	100.00	180.00	250.00	1000.00

पाठक लिखते हैं

माह दिसम्बर, 2000 का चकमक मिला तो बहुत खुशी हुई। परन्तु डाक-कर्मियों की हड़ताल की वजह से यह अंक देरी से प्राप्त हुआ। प्रत्येक अंक की तरह यह अंक भी कुछ खट्टा-मीठा सा रहा।

मैं दिसम्बर, 2000 अंक में 'एक भयानक रात की कहानी' पढ़ते-पढ़ते इतना उत्तेजित हो गया कि मेरी आन्तरिक भावना ने मुझे कलम उठाने पर मजबूर कर दिया। मैंने इस घटना के बारे में पहले से अवश्य ही सुना हुआ था पर यह नहीं पता था कि भोपाल के लोगों को एक ऐसी कष्टदायक रात का सामना करना पड़ा। इसके बारे में मैं और भी जानना चाहता हूँ। उन भोपालवासियों की भावनाओं से अवगत होना चाहता हूँ जिन्होंने इस रात का सामना किया। वो लोग एक दम से उस रात के बारे में दोबारा सोचकर चीख उठते होंगे। वो दृश्य कैसा था? सड़कों पर लाशों के ढेर ही थे। शमशान भरे हुए थे। उनके परिवार को क्या सरकारी सहायता मिली। सरकार के मुँह पर उन बिलखते परिवारों की चीखें एक जोरदार तमाचा है।

प्रार्थना है कि इसी के बारे में अगले अंकों में अधिक जानकारी दें। बच्चे इससे अपने ज्ञान में वृद्धि कर पाएँ। मेरी भारत सरकार से विनती है कि कृपया उन पीड़ित परिवारों की सहायता करे। हम पूरा सहयोग देंगे।

● **नकुल कुन्दरा, जालन्धर, पंजाब**

जनाब एडीटर साहब, आदाब। मैंने चकमक का जनवरी, 2001 का अंक देखा। यह पत्रिका मैंने पहली ही बार देखी मुझे बहुत रोचक व बच्चों के लिए ज्ञानवर्द्धक लगी। हमारे लिए इसके लेख जानकारी से भरपूर व स्फूर्ति प्रदान करने वाले हैं।

'खेल दुनिया भर के' में खेल से संबंधित समस्त जानकारी प्राप्त हो जाती है। मुझे साइक्लिंग के बारे में इतनी जानकारी पहले कभी प्राप्त नहीं हुई। पर इस लेख को पढ़कर लगा कि साईक्लिंग का इतिहास कितना रोचक है व इसके क्या नियम है।

माथापच्ची बहुत ही उपयुक्त स्तम्भ है। लेकिन इसमें थोड़े रोचक सवाल पूछा करें। अपनी प्रयोगशाला तथा मकर संक्रान्ति लेख बहुत अच्छे लगे।

इसका सदस्यता शुल्क अधिक होने की वजह से हमारे पापा मुझे इसकी सदस्यता नहीं लेने दे रहे हैं। तथा यह अंक मुझे अपने दोस्त के पास मिला था जो अब छत्तीसगढ़ चला गया है। अत: अब यह पत्रिका मैं कैसे प्राप्त करूँगा। कृपया मुझे जल्दी बतावें।

● **हुज़ेफा यमानी, जुमेराती, भोपाल, म. प्र.**

यहाँ से काट लें

चकमक के सदस्य बनें आप : उपहार पाएँ दोस्त

आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं। अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन | | | | | | |

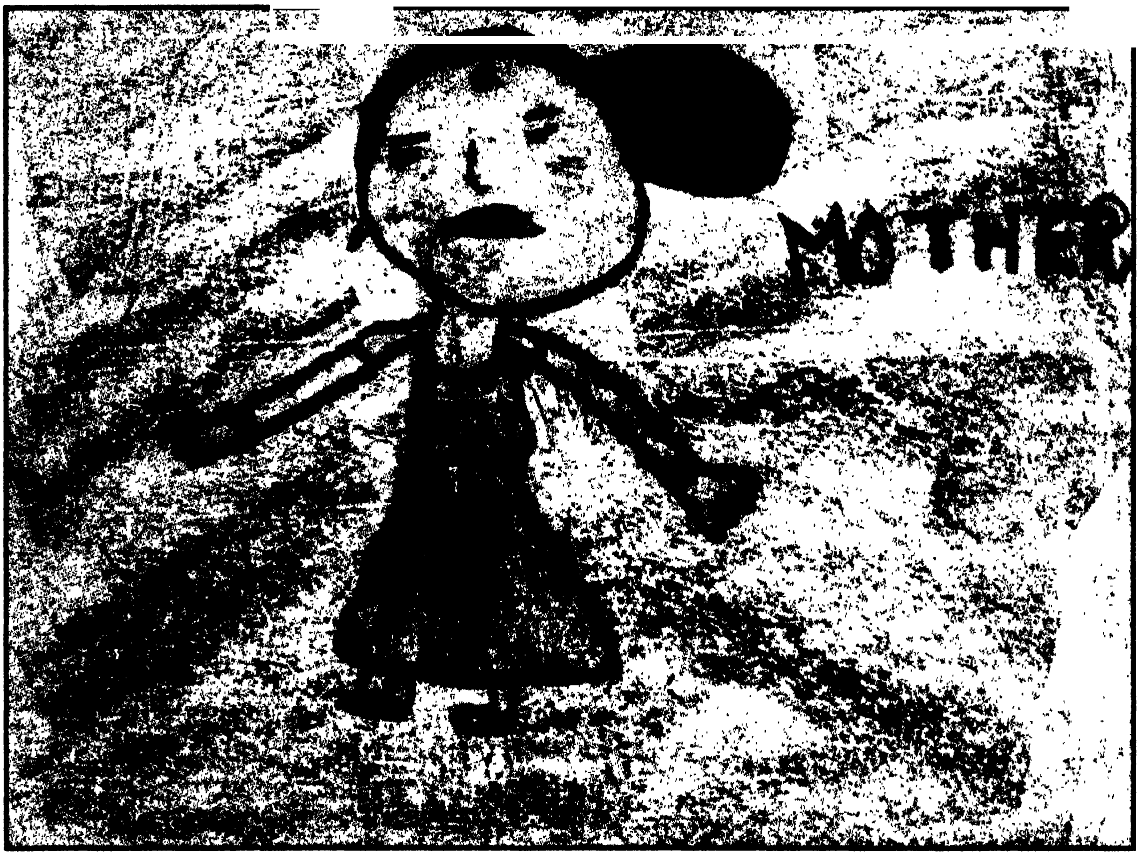

● नमिता, पहली, अम्बागढ़, उदयपुर, राजस्थान

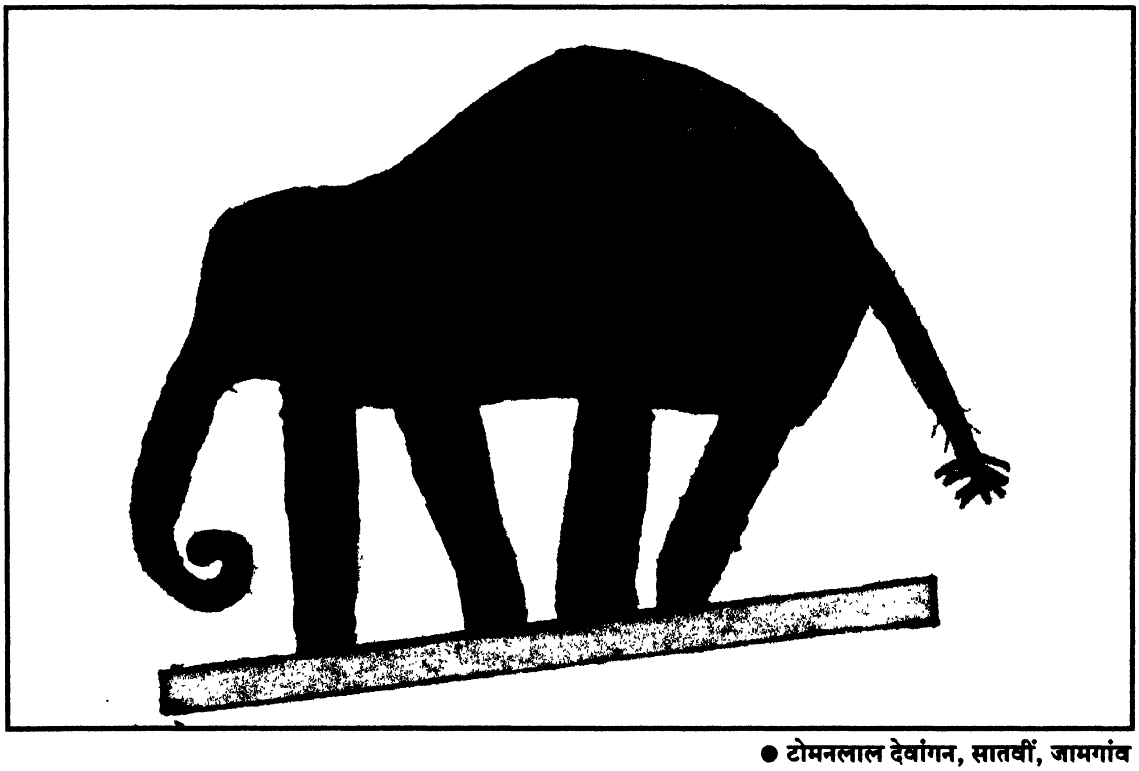

● टोमनलाल देवांगन, सातवीं, जामगांव

रेक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।

संपादक : विनोद रायना

12572